www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 01 जनवरी 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 01 जनवरी 2017 से 07 जनवरी 2017

पौ. शु. – 03 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 55, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, महाराष्ट्र ने डी.ए.वी. औंध, पुणे में आयोजित किया श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा महाराष्ट्र द्वारा डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, औंध, पुणे में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में द्विदिवसीय कार्यक्रम **'उत्सर्ग उत्सव'** आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत हवन, विद्वानों का प्रवचन, सेवा प्रकल्प एवं आर्य विद्वानों का अभिनंदन किया गया। इस शुभ कार्य में महाराष्ट्र और गुजरात से आए हुए विशिष्ट आर्यजनों तथा 1200 शिक्षकगण, छात्रों एवं अभिभावकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 22 दिसंबर, 2016 को दीप प्रज्ज्वलन, डी. ए. वी. गान एवं भजन से हुआ।

डी.ए.वी. ठाणे तथा पनवेल के शिक्षक, शिक्षिकाओं ने स्वामी श्रद्धानंद के प्रति भजनों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। भजनों के उपरान्त वेद के प्रकाण्ड विद्वान और ओजस्वी वक्ता श्री वागीश शर्मा ने अपने प्रवचन द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री वागीश जी ने कहा कि श्रद्धा से किया गया कार्य आनंद प्रदान करता है। अपने प्रवचन में डॉ. वागीश ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन एवं कार्य पर प्रकाश डाला। आस्था और श्रद्धा में अंतर बताते हुए उन्होंने कहा कि सिर्फ आस्था के कारण नहीं बल्कि श्रद्धा के आधार पर तर्क द्वारा निष्पक्ष सोचकर बातों को स्वीकार करना चाहिए। अपने सुख के साथ–साथ दूसरों के सुख का भी ध्यान रखना चाहिए।

श्रीमती सी. वी. माधवी, मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, महाराष्ट्र में धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम का आरंभ महायज्ञ के आयोजन से किया गया। इस महायज्ञ में प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी, तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणि सूरी जी, मुख्य यजमान थे। इस यज्ञ में श्री प्रबोध महाजन जी, उपप्रधान, श्री एस के शर्मा, महामंत्री, श्री सतपाल आर्य सहमंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली तथा श्रीमती जे. काकरिया, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश, श्री महेश चोपड़ा एवं श्री जोस कुरियन, प्रधान उपसभा महाराष्ट्र, एवं गुजरात तथा महाराष्ट्र के क्षेत्रीय निदेशक, प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं अन्य अतिथियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम महाराष्ट्र एवं गुजरात से पधारे आर्य विद्वानों तथा संन्यासियों का सम्मान किया गया। मान्य प्रधान जी ने 99 वर्षीय श्री स्वामी श्रद्धानंद का अभिनंदन करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री चंद्रशेखर लोखंडे एवं श्री संतोष आर्य द्वारा लिखित **'शुद्धि आंदोलन एवं मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी'** पुस्तक का विमोचन, आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी द्वारा किया गया। स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर आधारित एक नाटिका का भव्य प्रदर्शन हुआ। इस अवसर पर ट्राईसाईकल, सिलाई मशीन तथा अन्य साम्रगी देकर सेवा प्रकल्प पूरा किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का श्रोताओं के लिए संदेश और स्वामी श्रद्धानंद के जीवन पर आधारित नाटिका थी।

अपने संदेश में आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी ने सर्वप्रथम स्वामी दयानंद जी के कार्यों एवं विचारों से सभी को अवगत कराया। इसके बाद उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद के मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बनने की जीवन यात्रा का उल्लेख करते हुए किसी भी कार्य को श्रद्धापूर्वक तथा लगन से करने की प्रेरणा दी।

नाटिका में स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला गया। इस नाटिका का निर्देशन प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री अजय ठाकुर जी ने किया जिसमें डी.ए.वी. विद्यालय औंध पुणे के 350 से अधिक बच्चों ने प्रसंशनीय प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर श्रद्धानन्द सूर्यवंशी जी, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी, श्री आचार्य ध्रुव देव जी, श्री सोममुनि वानप्रस्था जी, श्री चंद्रकांत गर्जे जी, श्री चंद्र शेखर लोखंडे जी, श्री संतोष आर्य जी, श्री सुधाकर शास्त्री जी, को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की ओर से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए किये गये कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। यह सम्मान श्री पूनम सूरी जी प्रधान आर्य प्रादेशिक नई दिल्ली ने अपने कर कमलों से प्रदान किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 01 जनवरी 2017 से 07 जनवरी 2017

यज्ञ रचा, दान कर

• डॉ. रामनाथ वेदालंकार

न त्वां शतं चन ह्रुतो, राधो दित्सन्तमामिनन्।
यत् पुनानो मखस्यसे।।

ऋग् ९.६१.२७

ऋषिः **अमहीयुः आङ्गिरसः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (हे आत्मन्!), (**राधः**) धन को, (**दित्सन्तं**) दान करना चाहते हुए, (**त्वा**) तुझे, (**शतं चन**) सौ भी, (**ह्रुतः**) कुटिल वृत्तियाँ व कुटिल जन, (**अ आमिनन्**) हिंसित अर्थात् मार्ग–च्युत न कर पायें, (**यत्**) जब, (**पुनानः**) (स्वयं को) पवित्र करता हुआ। (तू), (**मखस्यसे**) यज्ञ रचाता है।

● हे पवमान सोम! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्विक–वृत्ति जीवात्मन्! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्हीं सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत–सी कुटिल स्वार्थ–वृत्तियाँ और बहुत–से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान–व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ–वृत्ति कहती है कि सहस्त्र, दश सहस्त्र, पचास सहस्त्र, लाख, दो लाख रूपया तुम अन्यों को दान कर कर रहें हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो? देखो, सब अपनी सम्पति बढ़ा रहे हैं; जो सहस्त्रपति है वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई–कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि स्वयं तो मोटा–झोटा पहनो, रूखा–सूखा खाओ, झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना। हे आत्मन्! तू उस स्वार्थ–वाणी को मत सुन। तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो? उनमें सब खाऊ–पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन्! तू उन उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ–भावनाएँ और सौ स्वार्थी–जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन्! वेद–शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान–खाते में डाल और उसे लोक–कल्याण में व्यय कर। दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, "अकेला भोग करनेवाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है"।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

इस अंक से महात्मा आनन्द स्वामी जी की अत्यंत लोकप्रिय पुस्तक 'आनन्द गायत्री कथा' का प्रकाशन धारावाहिक रूप में प्रारंभ किया जा रहा है। आशा है पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

—अब आगे

पहला दिन

प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

नौ द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन।
रहने में अचरज बड़ा, गये अचम्भा कौन।।

यह है मनुष्य–शरीर की आकृति। इस पिंजरे में नौ दरवाज़े हैं, सब खुले हुए। इसमें प्राण–रूपी पक्षी रहता है। द्वार खुले हैं, तब भी वह जाता नहीं – आश्चर्य की बात तो यह है। चला जाये तो इसमें विचित्रता क्या है? परन्तु मनुष्य के इस शरीर को 'महाभारत' के अन्दर सबसे उत्तम तथा सबसे बड़ा भी कहा गया है। 'महाभारत' कहता है– "सुन, तुझे रहस्य की एक बात बताऊँ–मनुष्य से अधिक उत्तम व श्रेष्ठ और कुछ नहीं।" और इसी शरीर के विषय में, जिसे 'महाभारत' में सबसे उत्तम तथा सबसे बड़ा कहा गया है, जिसे कवि ने नौ द्वारों का पिंजरा कहा, आजकल के विज्ञान–वेत्ताओं का मत है कि यह कुछ भी नहीं। इसमें अधिक–से–अधिक एक छटाँक गन्धक है, जिससे दियासलाई की सौ तीलियाँ बन सकती हैं; केवल इतनी मेदा (चरबी) है कि साबुन की सात टिकियाँ बन सकती हैं, एक सेर खाँड है, दो पाव अमोनिया, दो छटाँक नमक, छत्तीर सेर पानी और इतना लोहा कि जिससे दो इञ्च लम्बी कील बने सके। यह हिसाब ग़लत नहीं, वास्तव में मनुष्य के शरीर की असलियत यही है।

तब 'महाभारत' ने इस शरीर को सबसे बड़ा और सबसे उत्तम कहा तो क्यों? क्यों 'महाभारत' के ऋषि ने कहा– "देख, तुझे रहस्य की एक बात बताता हूँ – संसार में मनुष्य–शरीर से उत्तम और कुछ नहीं है।"

किन्तु केवल 'महाभारत' ने ही यह बात नहीं कही। 'अथर्ववेद' के 18वें काण्ड के दूसरे सूक्त में, ईश्वर की अमर कविता में जिसे वेद कहते हैं, उस कविता में जो कि न कभी बूढ़ी होती है, न मरती है, इस शरीर का अत्यन्त सुन्दर वर्णन आया है। अर्थ यह है–

"वह कौन–सा महान् शिल्पी है, जिसने इस शरीर का निर्माण किया?"

ज्यों–ज्यों इस शरीर को देखिये, त्यों–त्यों आश्चर्य होता है– इसको कैसा बना दिया! इतने रन्ध्र हैं इसमें, इसके बावजूद इसके अन्दरवाला भागकर कहीं जाता नहीं।

'नौ द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन'

किन्तु केवल नौ द्वार ही तो नहीं; इस शरीर के अन्दर दिन और रात में एक लाख तेरह हज़ार बार हृदय धड़कता है। इसमें कुछ कम बार साँस आता और फिर अन्दर चला जाता है। बाहर ही क्यों नहीं रह जाता? निकल क्यों नहीं जाता? कितना आश्चर्य होता है यह सब–कुछ सोचकर! किन्तु केवल यही क्यों? इस शरीर को बनानेवाले की कारीगरी किसी भी तरह ग़लत नहीं होती। दर्पण में अपना मुख देखिये– यह आँख, नाक, मुँह, सब–के–सब इकट्ठे एक स्थान पर क्यों रख दिये बनानेवाले ने? तनिक विचार कीजिये। यदि ये एक स्थान पर न होते; तो क्या होता? सोचिये – आँख यदि सिर के पीछे होती, नाक सिर के ऊपर बालों में होती और मुँह वहीं होता जहाँ अब है, तो क्या होता? यह देखने के लिए कि खाने को क्या है, हम हाथ में पकड़े ग्रास को सिर के पीछे ले जाते। यह देखने के लिए कि इसकी गन्ध कैसी है, सिर के ऊपर ले जाते। जितनी देर में वह मुँह के पास तक पहुँचता, कोई कुद्रव्य मिल जाता तो हमें पता न लगता। परन्तु मनुष्य–शरीर के बनाने वाले शिल्पी ने इन सबको एक स्थान पर इकट्ठा कर दिया। अब हाथ ग्रास लेकर ऊपर उठाता है, आँख देखती है कि इसमें कोई पतंगा, मिट्टी या कंकड़ तो नहीं है? और कोई ऐसी वस्तु तो नहीं जिसको खाना नहीं चाहिए? आँख पास कर दे तो नाक सूँघती है – बासी तो नहीं, दुर्गन्ध तो नहीं? तब ग्रास मुख में जाता है। वहाँ बत्तीस सिपाही बैठे हैं। ग्रास के एक–एक भाग का वे पूर्ण निरीक्षण करते हैं, एक–एक अवयव का। तीक्ष्ण तलवारें लेकर खड़े हैं। कोई भी कठोर वस्तु, कोई भी ऐसा पदार्थ जो उनके सामने सिर झुकाकर नर्म न हो जाए, उनके पहरे में से नहीं जा सकता। दाँत भी पास कर दें तो जिह्वा देखती है कि स्वाद कैसा है? पदार्थ दूषित तो नहीं है? पुराना गला–सड़ा तो नहीं है? और जब यह आज्ञा दे दे तो गले में लटकता हुआ कब्ज़ा उसे पेट में ले जाने की आज्ञा देता है। इसकी आज्ञा के बिना प्रत्येक वस्तु के लिए इस शरीर के बाहर 'नो एडमिशन'–'प्रवेश निषिद्ध है' लिखा है। साधारण–सी बात है यह, किन्तु, सोचने पर कितनी बड़ी मालूम होती है! इसीलिए इस शरीर को देखकर 'सबसे बड़ा तथा सबसे उत्तम' कहा गया।

'तैत्तिरीय उपनिषद्' में एक कहानी आती है कि संसार में जब सभी शरीर बन चुके तो ऋषियों और योगियों के सूक्ष्म शरीर इस संसार में आए। ईश्वर के बनाए हुए सभी शरीरों को उन्होंने देखा। घोड़े का शरीर, बैल का, हाथी का, दूसरे पक्षियों का। अन्त में उन्होंने

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता वर्तमान सन्दर्भों में

● डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

भारतीय धर्मग्रन्थों में महिलाओं को बहुत सम्माननीय स्थान होने के साथ ही देवियों की श्रेणी में रखा गया है। उन्हें अन्नपूर्णा एवं बुराइयों का नाश करने वाली देवियों की संज्ञा दी गयी है। किन्तु पुरातन समाज की सम्मानिता नारी के साथ परवर्ती काल में भेदभाव आरम्भ हो गया। अधिकांश महिलाओं को घर के अन्दर रहकर ही भूमिका निभानी पड़ती है। हमारे समाज की सोच ऐसी है कि जन्म से ही महिलाएं भेदभाव का शिकार हैं। घर के अन्दर व बाहर पग–पग पर अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जिससे लोग अपने जीवन पर चेतना के विकास के द्वारा नियन्त्रण करते हैं अर्थात् सशक्तीकरण बदलाव को सुगम बनाता है और व्यक्ति को उसकी इच्छा के अनुरूप सक्षम बनाता है। सशक्तिकरण एक अनुभूति है जो किसी को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानसिक रूप से सक्रिय बनाता है। संस्थागत परिप्रेक्ष्य में सशक्तिकरण सही वातावरण के साथ तालमेल करते हुए वैसी परिस्थितियों का निर्माण करता है जहाँ लोग अपने सामर्थ्य एवं योग्यता को पूरी तरह साकार कर सकते हैं।

भारत में स्वतन्त्रता के बाद महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास, समाज कल्याण का प्रमुख आधार रहा है। भारत में स्वतन्त्रता के समय जहाँ एक हजार स्त्रियों में से केवल 54 स्त्रियाँ साक्षर थीं वहीं आज इनकी संख्या बढ़कर लगभग 500 हो गई है। शिक्षा से स्त्रियों में नई सामाजिक चेतना का विकास हुआ है।

स्वतन्त्रता के बाद प्रथम पंचवर्षीय योजना से ही विकास प्रक्रियाओं में महिलाओं को समानता का दर्जा दिलाने के लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। प्रथम पंचवर्षीय योजना में महिलाओं के कल्याण को विभिन्न गतिविधियों और उनकी शिक्षा को उच्च प्राथमिकता देने पर जोर दिया गया वहीं पांचवीं और छठवीं पंचवर्षीय योजनाओं में उनके समग्र विकास का लक्ष्य निर्धारित करते हुए उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार पर विशेष रूप से जोर दिया गया। सातवीं पंचवर्षीय योजना में महिलाओं को सीधे तौर पर लाभ दिलाने का उद्देश्य निर्धारित किया गया। आठवीं पंचवर्षीय योजना में सशक्तीकरण पर बल दिया गया तथा 30 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की गयी। नवीं पंचवर्षीय योजना में महिलाओं के लिए भारत सरकार ने 30 प्रतिशत धनराशि उनके विकास पर खर्च की है। दसवीं पंचवार्षिक योजना में स्त्री पुरुष के बीच शिक्षा एवं वेतन दरों में अन्तर को 50 प्रतिशत कम करना, माता की मृत्युदर 4 प्रतिशत से घटाकर 2 प्रतिशत करना था।

भारत सरकार ने महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक अधिनियम भी बनाए हैं। विशेष विवाह अधिनियम, हिन्दू विवाह अधिनियम, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, स्त्रियों व कन्याओं का अनैतिक व्यापार अधिनियम, दहेज अधिनियम, समान वेतन अधिनियम, पंचायत राज अधिनियम में जारी किया गया। जिसका उद्देश्य महिलाओं का उत्थान करना था।

भारत सरकार ने रोजगार और प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्रावास तथा आश्रय सुविधाएँ, राष्ट्रीय महिला कोष, इन्दिरा महिला योजना, बालिका समृद्धि योजना, महिलाओं में यौन उत्पीड़न के विरुद्ध कार्य योजना, स्वशक्ति परियोजना आरम्भ की है। स्त्रियों को समानता के अधिकार देने के लिए अन्य देशों के साथ भारत में 8 मार्च को 'विश्व महिला दिवस' आयोजित किया जाता है।

स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकार एवं राज्यों की महिला व स्त्रियों को कल्याण योजनाओं का सम्पूर्ण लाभ नहीं मिल पा रहा है

स्वतन्त्रता के लगभग 6 दशकों के बाद भी महिलाओं को पुरुषों के समान स्थान प्राप्त नहीं है। कोई भी कानून हमारे मानव व्यवहार को नहीं बदल सकता। विडम्बना है कि घर का अस्तित्व स्त्री और पुरुष दोनों के लिए पृथक्–पृथक् है। अधिकांश स्त्रियों के लिए अभिशाप है तो पुरुषों के लिए सुखद एवं सुरक्षात्मक एहसास। आज स्त्रियों को शारीरिक, यौनिक, मानसिक एवं भावनात्मक इत्यादि स्वरूपों में घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। शारीरिक प्रताड़ना से अलग मानसिक प्रताड़ना सामने आ रही है। मानसिक प्रताड़ना के कारण महिलाओं में मानसिक रोगों की संख्या तेजी से बढ़ी है। अधिक समय तक यह स्थिति बने रहने के कारण उच्च रक्तचाप, डिप्रेसन का मरीज बन जाती है। मानसिक हिंसा का कारण दहेज, पति का बेरोजगार होना, पत्नी का बेरोजगार होना, पति–पत्नी में ईगो की समस्या विवाहेतर सम्बन्ध, आर्थिक तंग हालत, पुरुष के हाथ में आर्थिक ताकत का होना शामिल हैं।

महिलाएँ पुरुषों से कन्धा से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं, पुरुषों के साथ खेती का कार्य कर रही हैं। शासन एवं नीति निर्धारण में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। विश्व के देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में उच्च स्थान का प्रतिनिधित्व 5 प्रतिशत से भी कम है। धीरे–धीरे महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त हो रही हैं, महिलाएँ अब लोक प्रशासन, राजनीतिक पार्टियों, ट्रेड यूनियनों तथा व्यवसायों में भी लगी हैं। महिलाओं की प्रजनन वाली भूमिका ही उनके जीवन को पुरुषों की अपेक्षा जटिल बनाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ निरक्षर हैं। साक्षरता का निम्न स्तर अस्वास्थ्य कारक परिस्थिति का निर्माण करता है। ग्रामीण महिलाओं में अशिक्षा के कारण परिवार नियोजन पद्धति की अज्ञानता है। साक्षरता का निम्न स्तर अस्वास्थ्यकारक परिस्थितियों का निर्माण करता है। अच्छी चिकित्सा सुविधाओं की कमी भी कम जिम्मेदार नही है। कृषि के क्षेत्र में महिलाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

ग्रामीण महिलाओं को कोई आर्थिक स्वतन्त्रता नहीं है। उन्हें शिक्षित कर उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना होगा जिससे भूस्वामी और ठेकेदारों के शोषण से बचाया जा सके। महिलाओं को कानूनी शिक्षा के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित करना चाहिए। दुर्भाग्य से महिला को परिवार का प्रधान नहीं माना जाता। पुरुषों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति को रोकने का कार्य महिलाओं को करना होगा।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपनी रिपोर्ट में भारतीय महिलाओं के बारे में कहा था कि भारत में आधे से ज्यादा भार नारी उठा रही है तो क्या महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा?

महिलाएँ आजकल उच्च शिक्षा प्राप्त करके विभिन्न उच्च पदों को प्राप्त कर रही हैं। उनमें जागृति आई है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठकर उच्च पदों पर आसीन हैं। प्राइवेट व सरकारी कार्यालयों में, व्यावसायिक क्षेत्रों में निरन्तर सहभागिता बढ़ रही है। विवाह के बाद भी महिलाएँ पति की आय बढ़ाने में सहायक हो रही हैं। मँहगाई के इस युग में मध्यवर्ती परिवार के पति–पत्नी दोनों धन कमाकर विभिन्न सुख सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं में आत्मनिर्भरता आई है। आज विमान चालन के क्षेत्र में, सेना में, डॉक्टर, नर्स, अध्यापिका, अन्तरिक्ष वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी एवं विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे रही हैं। आज भारतीय महिलाओं ने अपनी योग्यता प्रतिष्ठा के बल पर भारत का नाम रोशन किया है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के रूप में एक ताकतवर और अब तक की सबसे ज्यादा अवधि तक सत्तासीन रहने वाली प्रधानमंत्री भी मिली हैं। सिविल सेवा में सुश्री किरन बेदी, कला व मनोरंजन में लता मंगेशकर, बेगम अख्तर, मीना कुमारी, माधुरी दीक्षित, अन्तरिक्ष में कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स खेलकूद में सानिया मिर्जा आदि ने देश का नाम रोशन किया है। हर छोटी बड़ी सफलता अर्जित करके पुरुषों के एकाधिकार को तोड़ा है और उनके प्रभुत्व को चुनौती दी है। महिलाओं की सफलता के आंकड़े दर्शाते हैं कि पुरुषों से ज्यादा चुनौतियों को पार करते हुए इन्होंने सफलता हासिल की है।

नारी को अनेक क्षेत्रों में बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास तथा अन्य बन्धनों के अनुरूप कार्य करते हुए दहेज, अन्धविश्वास, आडम्बर, शारीरिक एवं मानसिक हिंसा का विरोध करते हुए एक सशक्त भूमिका निभानी होगी।

औरत को औरत होने की बात को भूलकर केवल व्यक्ति रहकर समानता की बात करनी होगी। तभी बराबरी का अधिकार पाया जा सकता है। भारतीय संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों का अर्थ है कि भारतीय औरतों के पास मर्दों के बराबर फैसला लेने का अधिकार है कि वह अपना जीवन कैसे जीना चाहती हैं और क्या करना चाहती हैं। उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा।

भारत में अधिकार सम्पन्न न्यायपालिका, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग जैसे आयोग महिलाओं के अधिकारों के हनन को रोकने में प्रयासरत हैं। भारतीय संविधान में महिलाओं और पुरुषों को समानता के अधिकार दिए गए हैं और महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव समाप्त करने वाले कानूनों की कमी नहीं है। कोई भी कानून सामाजिक व मानव व्यवहारों को नहीं बदल सकता। महिलाओं को स्वयं आगे आकर अपने अधिकार प्राप्त करने होंगे।

क्या कभी हम सोच पाएंगे कि महिला

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

www.thearyasamaj.org

आदि संसार निरामिष भोजी

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

संसार के सभी प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ आदिकालीन मनुष्य को निरामिष–भोजी सिद्ध करते हैं। सृष्टि के आरम्भ में मानवों का भोजन फल, मूल, कन्द और अन्न आदि ही था। संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद 5।83।10 में स्पष्ट कहा गया है **'अजीजन ओषधीर्भोजनाय'** अर्थात् खाने के लिए ओषधियाँ उत्पन्न की गई हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद 6।140।2 में दाँतों को लक्ष्य करके कहा–**'व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्। एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय...।।'** अर्थात्–दाँतों का भाग या भोजन व्रीहि, यव, माष और तिल आदि हैं। पुरानी बाइबिल और कुरान आदि में लिखित आदम और हव्वा की कथा इसी सत्य को प्रकट करती है। (पं. युधिष्ठिर मीमांसक, वैदिक सिद्धान्त मीमांसा, (रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरयाणा), प्रथम संस्करण, 2033 विक्रमी)।

खुदा ने आदम, हव्वा और शैतान इन तीनों को स्वर्ग से गिरा कर मर्त्यलोक अर्थात् इस धरती पर भेज दिया। इतना ही नहीं, तीनों को अलग–अलग शाप भी दिए।

खुदा ने आदम को शाप देते हुए कहा–हे आदम! तुझे मैंने फल खाने से मना किया था, तू क्यों न माना, तू स्वर्ग से निकल और धरती पर जा। तुझे अब बराबर मिट्टी खोदकर, खेत जोतकर, अपना अन्न तैयार करना पड़ेगा। जमीन पर घोर परिश्रम करेगा, तभी तुझे खाने को मिलेगा और तब से आज तक मनुष्य को खेती करनी पड़ रही है। मनुष्य का स्वाभाविक भोजन खेती से पैदा किए गए पदार्थ हैं–वह शाकाहारी और अन्नाहारी है।

भारतीय साक्ष्य–वायुपुराण में स्पष्ट और विस्तृत रूप से लिखा है कि आदि युग में मनुष्य पृथ्वी से उपजे अन्न ही खाते थे। इसका एक अंश आगे उद्धृत किया जाता है–**'पृथ्वीरसोद्भवं नाम आहारं ह्याहरन्ति वै'** (8। 48)। अर्थात्–उस सत्ययुग में पृथ्वीरस से उत्पन्न आहार पर मनुष्य निर्वाह करते थे।

उस आदिकाल में पशुओं को मारकर खाना तो दूर रहा, यज्ञ में भी पशुवध नहीं किए जाते थे। इसका प्रमाण आयुर्वेद की चरक संहिता में मिलता है–**'आदिकाले खलु यज्ञेषु पशवः समालभनीयाः बभूवुर्नालम्भाय प्रक्रियन्ते स्म'** (चिकित्सा स्थान 19/4)। अर्थात्–आदिकाल में यज्ञों में पशुओं का स्पर्श मात्र होता था। वे आलम्भ अर्थात् वध नहीं किए जाते थे।

महाभारत संहिता अनुशासन पर्व 177। 54 और मत्स्य पुराण में भी यही तथ्य वर्णित है। डार्विन मतानुयायी लोगों की मिथ्या–कल्पना है कि आदि मनुष्य आखेट करके अपना भोजन प्राप्त करता था। संसार का पुरातन इतिहास पदे–पदे इस मत का खण्डन करता है।

पृषध्र काल में पशुबलि–पृषध्रकाल में यज्ञों में पशु मारे जाने लगे। (चरक संहिता, चिकित्सा स्थान। उग्रादित्य का कल्याणकारक, पृ. 724)। वासिष्ठ धर्मसूत्र अ. 21 भी द्रष्टव्य है। तब वृथा मांस भक्षण निषिद्ध था। महाभारत में दीर्घ जीवन प्राप्ति के उपदेश में लिखा है–**'वृथा मांसं नाश्नीयात्'**। वृथा मांस भक्षण आयु को न्यून करता है।

पञ्चतन्त्र, पूर्ण भद्र का पाठ, तन्त्र 3, पृ. 191 पर अजा का अर्थ व्रीहि करके यज्ञ में बकरे के वध का निषेध बताया है।

अन्य जातियाँ–यहूदी और यवन मानते थे कि आदि अर्थात् सुवर्ण–युग में मनुष्य निरामिष–भोजी था–

Among the Greeks and Semites, therefore, the idea of a Golden Age, and the trait that in that age man was vegetarian in his diet...(The Religion of the Semites, p. 303).

Man in his primitive state of innocence, lived at peace with all animals, eating the spontaneous fruits of the earth! अर्थात्–यवन और यहूदी आदि लोग मानते थे कि सुवर्ण–युग में मनुष्य केवल शाकाहारी था...। मनुष्य सर्वथा निर्दोष था और सब पशुओं के साथ शान्ति का व्यवहार करता था। वह भूमि की स्वाभाविक उपज खाता था। इति।

गोमांस वर्जन–जब लोग शिष्टाचार विहीन हो गए और मांस खाने लग पड़े, तब संसार की अनेक जातियाँ गोमांस खाना आचार के विरुद्ध समझती रहीं। हैरोडोटस (तत्रैव, पृ. 601) लिखता है–

Thus from Egypt as far as lake Tritonis.... Cows flesh however none of these tribes ever taste, but abstain from it for the same reason as the Egyptians, neither do they any of them breed swine. Even at Cyrene, the women think it wrong to eat the flesh of the cow,... अर्थात्–ये जातियाँ गोमांस का स्वाद भी कभी नहीं लेतीं। सिरीन स्त्रियाँ भी गोमांस खाना अधर्म समझती हैं। कभी यह भाव सारे संसार में विद्यमान था। उत्तरकाल में मनुष्य असभ्य होता गया और इन श्रेष्ठ गुणों का परित्याग करता गया।

ईसा के शिष्य निरामिष भोजी–ईसाजी के सब शिष्य और अनुयायी भिक्षु पहले निरामिष–भोजी थे। अल–मासूदी (हिजरी 330=विक्रम संवत् 998) लिखता है–

"The disciples of the Messiah are seventy two in number, besides whom twelve more have to be counted..." "of all the Christian monks, those of Egypt are the only ones who eat meat, because Mark permitted them to do so." (इण्डियन अण्टिक्वेरि, भाग 18, अक्टूबर सन् 1889, पृ. 315 पर मेजर जे.एस. किङ्ग का मूल अरबी गन्थ से अंग्रेज अनुवाद, अरबी ग्रन्थ–किताब अल–मरुज–उल–ज़हब व मुआविन–अल जौहार) अर्थात् –सारे ईसाई भिक्षुओं में से केवल मिश्र के भिक्षु मांस खाते हैं, क्योंकि ईसा–शिष्य मार्क ने उन्हें इस बात की आज्ञा दी थी। इति।

पशु–बलियाँ–जब भारतवर्ष में कुछ पतन हो गया और पशु–बलियाँ यज्ञों का अङ्ग बन गईं तब संसार के अन्य देशों ने भी इस प्रथा का अनुसरण किया। पर वृथा मांस भक्षण से बचे रहने का वे फिर भी यत्न करते रहे। हैरोडोटस लिखता है–The Egyptian priests make it a point of religion not to kill any live animal except those which they offer in sacrifice. अर्थात्–मिश्र के पुरोहितों का धार्मिक सिद्धान्त है कि वे यज्ञ के अतिरिक्त किसी जीवित पशु को नहीं मारते।

"अग्निर्ज्योति" चाणक्यपुरी
अमेठी, उ. प्र.–227405
मो. 09415185521

☞ पृष्ठ 03 का शेष

महिला सशक्तिकरण की...

पुरुषों के बराबर हैं और उनकी पूरक हैं? क्या हम उनका आदर करते हैं? क्या हम उनकी भावनाओं का आदर करते हैं? क्या हम उनके अधिकारों को देते हैं? यदि नहीं तो इसके लिए प्रत्येक पुरुष जिम्मेदार है। हम उक्त सभी दशाओं में महिलाओं के प्रति दोषी हैं।

स्वामी विवेकानन्द–"जब तक महिलाओं की दशा में सुधार नहीं होता तब तक इस विश्व के कल्याण का कोई उपाय नहीं है। यह सम्भव नहीं कि कोई पक्षी मात्र एक पंख लगाकर ही उड़ ले।"

भारत में महिलाओं की जनसंख्या कुल आबादी का लगभग 50 प्रतिशत है। हम भूल जाते हैं कि महिलाओं का उतना ही अधिकार है जितना पुरुषों का। शिक्षा व विकास के समान अवसर, परिवार में सम्मान की स्थिति, समान कार्य के लिए समान वेतन, आर्थिक स्वतन्त्रता पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

भारत में महिलाओं को पुरुषों के द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों के प्रति सजग होना होगा। उन्हें पुरुषों के समकक्ष अधिकार स्वयं आगे आकर प्राप्त करने होंगे। घरेलू हिंसा पर प्रतिबन्ध आवश्यक है। इस हेतु माता पिता को उनके शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास हेतु स्वस्थ पारिवारिक परिवेश प्रदान करना होगा। स्त्री के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना होगा। इसके अतिरिक्त नारी उद्धार गृहों का कायाकल्प किया जाना चाहिए। स्त्रियों को विपरीत परिस्थितियों में भी शारीरिक, मानसिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनने एवं पुरुषों के अत्याचार से मुकाबला करना होगा।

वर्तमान समय में महिलाओं में जागृति आई है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक व सशक्त हुई हैं किन्तु अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो पाई है। यदि स्त्रियाँ सशक्त होंगी तभी समाज का चतुर्दिक विकास होगा। स्त्रियों के प्रति नकारात्मक रवैया, अनेक परिवर्तन के बाद भी सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव न आना है। इसे बदलना होगा तभी नारी समाज में आगे बढ़ सकेगी। आज महिलाओं को अपनी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति की रक्षा करते हुए सशक्त होकर आगे बढ़ना होगा तभी समाज का सर्वांगीण विकास हो सकेगा।

बी–54 सूरजकुण्ड कालोनी
डाकखाना–गोरखनाथ–273015
गोरखपुर (उ.प्र.)
मो. 9415592187

www.thearyasamaj.org

ईश्वर की प्रशंसा होने से क्या वेद अपौरूषेय हो सकते हैं?

● मनमोहन कुमार आर्य

क्या वेद अपौरूषेय हैं? यदि हैं तो वेदों में ईश्वर ने स्वयं ही दिए ज्ञान में आदि ऋषियों व भावी मानवपीढ़ियों से अपनी प्रशंसा क्यों कराई है? अपनी प्रशंसा करना व कराना मानवीय दोष माना जाता है। ईश्वर तो सबसे बड़ा व महान होने के कारण यदि ऐसा करता है तो यह उचित प्रतीत नहीं होता। ईश्वर को तो यह चाहिए था कि वह वेदों में यह कहता कि मैं एक सर्वव्यापक सत्ता हूँ। मेरा स्वरूप व गुण, कर्म व स्वभाव ऐसे व इस प्रकार के हैं। जीवात्माओं की संख्या जीवों के ज्ञान में अनन्त व मेरे ज्ञान में सीमित हैं। इन जीवात्माओं के गुण, कर्म व स्वभाव आदि इस प्रकार के हैं। इसके साथ जड़ प्रकृति का विवरण होना चाहिए था। इसके बाद ईश्वर को संकेत में कहना चाहिए था कि मनुष्य सुखों की प्राप्ति व अपवर्ग अर्थात् मोक्ष के लिए वेदानुसार आचरण व ईशोपासना करे। मनुष्यों के उन कर्तव्यों का वर्णन होना चाहिए था जिससे जीवन सुखी, उन्नत व मोक्षगामी होकर इसकी प्राप्ति करा सके। वेदों की वर्णन शैली को लेकर ऐसी शंकाएँ प्रायः सुनने को मिलती हैं और यह कई बार उचित भी लगती हैं परन्तु यह विषय गहन होने के साथ साधारण व्यक्तियों की समझ में नहीं आता। हमारे ऋषि–मुनि उच्च कोटि के ज्ञानी होते थे। उनमें से कभी किसी को इस विषय में शंका नहीं हुई। यही कारण है कि वह शत–प्रतिशत ईश्वर व उसके ज्ञान वेद में विश्वास रखते रहे हैं। अब हम शंका से जुड़े अन्य प्रश्नों पर विचार करते हैं।

हम जानते हैं कि जब कभी हमारी यह सृष्टि अर्थात् सूर्य, पृथिवी व चन्द्रमा आदि बन कर वर्तमान की भाँति कार्य करना आरम्भ चुके थे और पृथिवी पर मनुष्य जीवन के लिए वायुमण्डल आदि अनुकूल रहा होगा और आवश्यकता के समस्त पदार्थ उपलब्ध रहे होंगे तो मनुष्य आदि प्राणी सृष्टि हुई थी। इससे पहले मनुष्यादि प्राणी पृथिवी पर नहीं थे। अब जिसने इन मनुष्यों को जन्म दिया अर्थात् अमैथुनी सृष्टि में इनकी आत्माओं के शरीर बनाए तो उसका यह दायित्व था कि वह इन्हें ज्ञान भी दे। ज्ञान भाषा में ही निहित होता है अतः उस ज्ञान के साथ भाषा का देना भी आवश्यक था। यह कार्य इस सृष्टि में सृष्टिकर्ता ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य सत्ता कर नहीं सकती थी, सौभाग्य से वह सर्वव्यापक होने से सर्वत्र विद्यमान थी भी, अतः उसी ईश्वर ने प्रथम वा आदि मनुष्यों में से चार श्रेष्ठ विद्वान् जिन्हें चार ऋषि कहते हैं, उन्हें चार वेदों का ज्ञान दिया। यह वेद हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद और जिन्हें ज्ञान दिया वह थे अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा। ईश्वर प्रदत्त वेदों का यह ज्ञान आज भी सुरक्षित है और हमें मन्त्र संहिताओं के रूप में उपलब्ध है। ईश्वर ने क्योंकि वेदों के ज्ञान को वैदिक भाषा में दिया था तथा उनके अर्थ भी ऋषियों को बताए या जनाए थे जिससे वेदाध्ययन की परम्परा का आरम्भ हुआ और वह अविच्छिन्न रूप से महाभारत काल तक चलती रही। अब प्रश्न है कि ऋषि व चार मनुष्यों जिन्हें ईश्वर ने ज्ञान दिया वह माता–पिता–आचार्यो से शिक्षित न होने के कारण ज्ञानहीन थे। उन्हें किसी भाषा का भी ज्ञान नहीं था तो ईश्वर ने उनको किस प्रकार से ज्ञान दिया। हमें यह भी स्मरण रखना है कि ईश्वर वह सत्ता है जिसने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है और उसे इस अपनी बनाई हुई सृष्टि का पूरा–पूरा व ठीक–ठीक ज्ञान है। यहाँ स्थिति यह है कि ईश्वर माता–पिता–आचार्य की स्थिति में है और ऋषि व मनुष्य एक शिशु के तुल्य हैं यद्यपि वह युवावस्था में थे। ज्ञान न होने वा ज्ञान के स्तर की दृष्टि से वह शिशु तुल्य ही कहे जाएँगे। हमें लगता है कि सबसे अच्छा तरीका यह है कि मनुष्यों को जिस प्रकार से ईश्वर के प्रति व्यवहार करना है, भक्ति या उपासना करनी है, ध्यान, विचार व चिन्तन करना है या जिस प्रकार से स्तुति व प्रार्थना करनी है, वह हमें व मनुष्यों को उसी रूप में अर्थात् शिशु के शब्दों में बोलकर बताता कि जिस रूप में मनुष्यों को ईश्वर के प्रति उन प्रार्थनाओं आदि को प्रस्तुत करना था। यदि वह अपना स्वरूप पूरी तरह व ठीक से न बताता, और एक मनुष्य या उपासक के रूप में वर्णन न करता जैसा कि वेदों में है, तो मनुष्यों को भ्रान्ति होती व हो सकती थी और वह भ्रान्ति फिर प्रलय अवस्था तक विद्यमान रहती। ईश्वर मनुष्यों के स्वभाव, सामर्थ्य तथा कमियों आदि को भलीप्रकार से जानता है। उसने उन सब को जानकर ही सरलतम रूप में वेदों के ज्ञान को मन्त्रों के रूप में प्रस्तुत किया जिससे वह संसार के सभी पदार्थो का भली प्रकार से ज्ञान प्राप्त कर सके। जहाँ तक जीवात्मा की ओर से ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना की बात है, यहाँ भी ईश्वर को उसे जीवात्मा को निर्भ्रान्त ज्ञान देना था। यह निर्भ्रान्त ज्ञान ऐसा होना चाहिए जिसमें ईश्वर के किसी गुण को अतिश्योक्ति रूप में न प्रस्तुत किया गया हो। ठीक–ठीक, पूरा–पूरा जैसा है वैसा ही व उतना ही, न कम न अधिक, यथावत् वर्णन हो। ऐसा ही हमें वेदों में प्राप्त होता है।

हम अनुभव करते हैं कि वेद मन्त्रों में जिस प्रकार से ईश्वर विषयक ज्ञान प्रस्तुत किया गया है वह सर्वोत्तम तरीका है, इसमें ईश्वर का किसी प्रकार का अपनी प्रशंसा कराने का अनुचित भाव नहीं है। हाँ, ईश्वर की सत्य विधि से उपयुक्त स्तुति व प्रार्थना हो सके जिससे मनुष्यों का कल्याण हो, उसके लिए आवश्यकता के अनुरूप मंत्रों का निर्माण कर ईश्वर ने आदि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान ऋषियों की आत्माओं में प्रेरणा द्वारा दिया था। यदि वह ऐसा न करता तो मनुष्य ईश्वर की प्रशंसा करने में संकोच करते क्योंकि तब उनके पास इसका कोई प्रमाण व उदाहरण न होता। उन्हें इसके लिए स्वयं स्तुति के मन्त्रों को बनाना होता जिस पर सर्वसम्मति कराना कठिन होता। वर्तमान समय के उदाहरण से स्थिति अधिक स्पष्ट हो जाती है जब कि धार्मिक व मजहबी लोग तर्क व प्रमाण युक्त सत्य बात को स्वीकार नहीं करते। यदि ईश्वर वर्तमान मन्त्रों से भिन्न रूप में ज्ञान देता तो इससे परस्पर विवाद भी हो सकते थे जिससे अनेकों का जीवन इस विवाद को हल करने में व्यतीत हो जाता और तब भी शायद कोई निर्णय न हो पाता। इस विवेचन से हमारे मित्र की शंका का समाधान हो जाता है। ईश्वर ने वेदों के जो मन्त्र बनाए और उनमें स्तोता, प्रार्थनाकर्त्ता व उपासक की ओर से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना के स्तुति व प्रशंसा वाले वचन व शब्द हैं, ऐसा कर ईश्वर ने मनुष्यों पर परम उपकार किया है।

हमारा निजी अनुभव है कि जब हम विद्यार्थी थे व कक्षा 8 से 12 तक गणित के प्रश्न हल करते थे तो जो प्रश्न हल नहीं होते थे उसमें हमारे घंटों खराब हो जाते थे। तब हमें पाठ्य पुस्तक की कुंजी, टीका या गाइड पुस्तकों का सहारा लेना पड़ता था जिसमें उस प्रश्न को हल करने का हर चरण (step) दिया गया हो। उसे देख कर हमें जो प्रसन्नता होती थी, इसका अहसास हमें अब भी है। हमने सरकारी सेवा के दौरान निर्वाचन भी कराए हैं। हमें निर्वाचन में जाने से पूर्व प्रशिक्षण दिया जाता था और इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन में बनावटी वा कृत्रिम (mock) वोटिंग करके बताया जाता था। जो बात हमें वोटिंग मशीन संबंधी पुस्तक पढ़कर घंटों समझ में नहीं आती थी वह कृत्रिम वोटिंग द्वारा कुछ ही मिनटों में सरलता से समझ में आ जाती थी। इस दृष्टि से वेद में ईश्वर के स्तुति, प्रार्थना व उपासना आदि के मंत्रों में जो ईश्वर के यथार्थ गुणों की यथार्थ प्रशंसा स्तोता की दृष्टि में प्रस्तुत की गई है वह साभिप्राय व आवश्यक होने से इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है और इससे वेदों का अपौरूषेयत्व यथावथ अक्षुण्ण रहता है।

इस विषय में विचार कर लेना उचित होगा कि यदि ईश्वर वेदों के वर्तमान स्वरूप में वेद ज्ञान न देता तो फिर किस रूप में देता और क्या वह परिवर्तित भिन्न रूप इस वर्तमान स्वरूप की ही तरह से उपयोगी होता? ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व शतक्रतु है। अतः उसकी कृति भी उसके स्वरूप के अनुरूप ही होगी व होनी भी चाहिए। हमारा तात्पर्य है कि मनुष्य एकदेशी, ससीम व अल्पज्ञ है। मनुष्य की कृति से सहस्रों गुणा अधिक महत्त्वपूर्ण और विलक्षण होना ईश्वर की कृति के लिए अनिवार्य है। क्या वेद इस प्रकार के हैं? इसका उत्तर हमें हाँ में मिलता है। पहले तो हम वेदों की भाषा पर ही विचार करें। वेदों की भाषा संसार की सभी भाषाओं से भिन्न व सर्वोत्कृष्ट है। यह मानवीय भाषा या कृति न होकर ईश्वर की कृति है। रूढ़ वा मानवीय भाषाओं में एक शब्द के एक या दो अर्थ ही होते हैं। अंग्रेजी में सूर्य के लिए (sun) शब्द का प्रयोग मिलता है। इसके पर्यायवाची एक दो शब्द और हो सकते हैं परन्तु वैदिक संस्कृत व उसका अनुकरण कर बनी लौकिक संस्कृत में सूर्य के लिए अनेकों पर्यायवाची शब्द हैं। ऐसी भी संज्ञाएँ या शब्द हैं जिनके पर्यायवाची शब्द एक सौ से अधिक हैं। यह विलक्षणता वैदिक संस्कृत में ही उपलब्ध है। वैदिक संस्कृत की वर्णमाला, व्याकरण, शब्द समार्थ्य, नए शब्दों के निर्माण की क्षमता व इसमें सरलता आदि भी अन्यतम है। महर्षि दयानन्द, निरूक्त व आर्ष व्याकरण के अनुसार सभी वैदिक शब्द रूढ़ न होकर यौगिक वा धातुज हैं इससे यह ईश्वरीय सिद्ध होते हैं। प्रत्येक वैदिक शब्द का वही अर्थ क्यों है, इसका उत्तर भी निर्वाचन पद्धति से ज्ञात होता है। संसार की किसी भाषा में यह योग्यता, सामर्थ्य व गुण नहीं है। वेदों को काव्य में प्रस्तुत कर सृष्टि के आरम्भ में ही अपनी एक और विलक्षणता का परिचय दिया, उस समय जबकि मनुष्य युवा होकर भी बोलना नहीं जानता था। आज भी यह माना जाता है और प्रयोग में लाया जाता है कि माता अपने नवजात व छोटे शिशु को सुलाने के लिए लोरियाँ गाती है। लोरियों, गानों व काव्य को आसानी से स्मरण किया जा सकता है जबकि गद्य में अधिक समय लगता है। गान काव्य का ही होता है। परमात्मा ने भी सृष्टि के आरम्भ में अपनी भाषा में जिसके अर्थ भी उसने ऋषियों को जनाए थे, काव्य या आम भाषा में लोरियों व गीत सुनाकर ज्ञान दिया था। वेदों के जो मन्त्र हैं उनके अनेक अर्थ किए जा सकते हैं जो सभी उपयोगी होते हैं। महर्षि दयानन्द ने और बाद में उनके अनुयायियों यथा डा. रामनाथ वेदालंकार आदि ने वेद भाष्य करते हुए इनका दिग्दर्शन कराया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, अतः यह उसके स्वरूप की ही तरह सार्वभौमिक व सार्वकालिक होने के साथ सृष्टिकम के अनुकूल व अनुरूप हैं। वेद व इसका ज्ञान सदा–सर्वदा प्रासंगिक रहता है तथा दो अरब वर्ष पूर्व प्रदान किए जाने पर यह आज भी पूर्णतया प्रासंगिक व अपूर्व है जिसकी तुलना में संसार का कोई ग्रन्थ नहीं है। वेदों से ही ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान होता है। संसार के वैदिक साहित्य से भिन्न किसी धार्मिक व अन्य ग्रन्थ में यह सामर्थ्य नहीं है। यदि कहीं कुछ है तो वह वेदों से आयातित है। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति सम्बन्धी सत्य ज्ञान आज भी विज्ञान व वैदिक धर्म से इतर धर्मो–मतों–मजहबों में से किसी के पास या उनकी किसी धार्मिक पुस्तक में नहीं है। ऐसी अनेकानेक विशेषताएँ वेदों में हैं, इस कारण सारी मानव जाति वेदों का ज्ञान देने वाले अपने अभीष्ट परमेश्वर व वेदों की रक्षा करने वाले पूर्वजों जिनके कारण आज भी वेदों का ज्ञान अपने मूल स्वरूप में हमें सुरक्षित उपलब्ध है, ऋणी व कृतज्ञ हैं। कुछ अज्ञानी व स्वार्थी लोग इसे मानने को तैयार नहीं हैं, जिसका कारण अज्ञानता के साथ उनका अहंकार है।

हमने विषय को समझने व समझाने का प्रयास किया है। इस पर अनेक दृष्टियों से और भी विचार किया जा सकता है परन्तु उपर्युक्त प्रस्तुत विचार विषय को स्पष्ट कर रहे हैं, ऐसा हमारा अनुमान है। आशा है कि अन्य आर्य विद्वान इस विषय पर विचार कर लेखों के माध्यम से अनुगृहीत करेंगे।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

www.thearyasamaj.org

ईश्वर, जीव और प्रकृति का विज्ञान क्या है?

● हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' (कीर्तिशेष)

ईश्वर, जीव और प्रकृति तथा जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। इन दोनों का ज्ञान ऋषि दयानन्द ने आविष्कार किया है। बर्फ का बनना, जल का बनना और वृष्टि का होना भी एक विद्या है। पांच सूक्ष्म–भूतों से पांच महाभूतों को जीवन उपयोगी बनाना भी विद्या है। वनस्पतियों तथा बिजली का उत्पन्न होना भी विद्या है। मानव शरीर के अन्दर और बाहर की रचना भी बुद्धि और विद्या के अनुसार हुई है।

सूर्य का विज्ञान भी एक विद्या है। परमेश्वर की सृष्टि में यह सूर्य एक विराट् जाज्वल्यमान अग्नि का पिण्ड है वह न घटता है न बढ़ता है क्योंकि उसमें से जितनी अग्नि शिखायें निकलती हैं उतनी ही उसमें उत्पन्न हो जाती हैं, अरबों वर्षों से उसे अविरत कैसे ईंधन प्राप्त हो रहा है? तो यह सब सविता देव से हो रहा है। (उसमें अद्भुत क्रिया हो रही है) सूर्य में मुख्य रूप से 'हीलियम एवं हाइड्रोजन' गैसें हैं। इन गैसों के कारण उसमें अनेक तरह की तापक्षेपी रासायनिक प्रतिक्रियायें होती रहती हैं, जिससे सूर्य का तापमान सदा बना रहता है। वेद में **"उत ऊर्ध्वम अततीत्मुदानः"**– इस व्युत्पत्ति से ज्ञात होता है कि यह उदान–वरुण तत्व–सबसे हल्का होने से उदान है, अतः राजा बनकर सबसे ऊपर विराजमान है। इस मंत्र में कहा है कि वरुण तत्व, उदान–हाइड्रोजन ही सूर्य को मार्ग देता है। अर्थात् सूर्य के चारों ओर हाइड्रोजन गैस रूप में है उससे अपने तेज से बना रहता है और उसकी किरणों को उससे मार्ग प्राप्त होता है। इस प्रकार वरुण तत्व का प्रकाश से सम्बन्ध है।

वेद ने सूर्य अग्नि को समस्त जगत का आत्मा और प्राण कहा है–'सूर्य आत्मा जगत्स्थुषश्च, (अजु. 7, 42) इन शब्दों में कहा है। वास्तव में सूर्य जगत् का आत्मा रूप ही है।'

सूर्य के उस ज्वलन्त गोले से फुहारे जैसी विद्युत उज्ज्वल ज्योतियाँ बहुत तीव्रगति से निकलती हैं, जिनसे असंख्य किरणों की प्रकाश तरंगे सर्वत्र फैल जाती हैं, जिनमें अपार ऊर्जा शक्ति विद्यमान रहती है, उसकी रश्मि बाहर निकलते समय सप्तरंग की दिखलाई देती है। इस प्रकार उसमें कितनी ही अनजानी शक्तियां अविरत क्रियान्वित होती रहती हैं।

मनुष्य में जो प्राण है वह सूर्य के समान है, क्योंकि उनके सो जाने पर भी प्राण की क्रिया अविरत चलती रहती है। सूर्य से निकलने वाली जो सीधी और प्रखर किरणें होती हैं वह चन्द्रमा से टकरा कर जब धरती के वायुमण्डल के स्तरों में प्रवेश करती हैं तब तिरछी हो जाती हैं और उन स्तरों से छनकर कोमल बनकर वनस्पति एवं प्राणियों के लिये ऊर्जा तथा जीवन दायक बन जाती हैं। इस प्रकार परमेश्वर के वैज्ञानिक नियम द्वारा जितनी प्राकृतिक सृष्टियाँ हैं उन सबकी अलग–अलग विद्या है, जिसे वैज्ञानिक जन जानते रहते हैं।

ईश्वर क्या है? तो वह आत्मा से भी अत्यन्त सूक्ष्म होने से सर्वव्यापक, सर्वोपरि, सामर्थ्यवान और सर्वज्ञ गुणों से सम्पन्न है। वह दूर से दूर और निकट से निकट सारे प्राणियों के आत्माओं में प्राण के रूप में विद्यमान है।

उपनिषद के ऋषि कहते हैं–**"दिव्योऽमूर्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरोह्यजः।**

अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात् परतः परः।।" (मुण्ड. 2,1,24)

वह प्रकाश स्वरूप परमात्मा निश्चय ही मूर्ति से रहित सबमें व्यापक है। वह बाहर–भीतर विद्यमान है। अजन्मा है। पंचतत्वों से बने प्राण व मन से रहित शुद्ध है। वह नाशरहित कारण प्रकृति से भी सूक्ष्म और जीवात्मा से भी सूक्ष्म परमात्मा है।

वेद ने भी कहा है–**'अभीषतस्तदा भरेन्द्रज्यायः कनीयसः।**

पुरुवसर्हि मघवन्त्सनादसि भरे भरे च हव्यः।।' (ऋ. 7, 32, 24)

जो परमात्मा सूक्ष्म से सूक्ष्म, महान से महान्, सनातन, सर्वाधार, सर्वव्यापक और सबके द्वारा उपासना करने योग्य है, उसी का आश्रय सब लोग करें।

ईश्वर मानव में विद्यमान चेतन जैसा अल्पज्ञ नहीं है, वह आत्मा के गुण, क्रिया, स्वभाव से बिल्कुल पृथक् है। आत्मा कोई मिश्रित पदार्थ नहीं, अमिश्रित द्रव्य है, इसलिये उसका परिवर्तन नहीं होता। वह परिच्छिन्न होने से उसकी गति भी है। वह ऐसा सूक्ष्म अणु है, जिसमें ज्ञातृत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व के गुण बीज रूप से विद्यमान होते हैं। उसका जन्म और मृत्यु नहीं है, पर उसके संयोग से ही निर्धारित आयु के अनुसार शरीरधारी प्राणियों का जन्म और आयु की समाप्ति पर आत्मा के वियोग से उनकी मृत्यु हो जाती है। (पर आयु के रहते अकाल मृत्यु भी हो जाती है)।

परमात्मा अजन्मा, अमर, नित्य और पवित्र है। उसकी कोई गति नहीं है क्योंकि वह व्यापक होने से प्रकृति का कोई वैज्ञानिकों के खोजे हुए 'गॉडपार्टिकल', कण नहीं है, वह सबसे परे प्राण के समान सर्वत्र पूर्ण है। वह क्षितिज जैसा है उसे कोई भी वैज्ञानिक पकड़ नहीं सकता क्योंकि वह वैज्ञानिकों की खोज से परे है। उसे तो अष्टांग योग द्वारा ही जाना जाता है।

सृष्टि की आदि में प्रकृति के परमाणुओं से तो सारे तत्वों और बीजों से वनस्पतियाँ तथा उन सबसे अनेक प्रकार के रासायनिक तत्वों के योग से 'रज वीर्य' जैसे उपादान एवं उनसे शरीर बनाने वाले सूर्य के प्रकाश से परमाणुओं का बन जाना। यही तो समझना है कि केवल परमाणु के उपादान से जिन्होंने नियमपूर्वक भिन्न–भिन्न तत्वों एवं पदार्थों तथा वनस्पतियों एवं शरीर बनाने वाले परमाणुओं से शरीर के डिजाइन में ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ और मस्तिष्क तक की रचना कर दी। इससे ज्ञात होता है कि तत्वों के माध्यम से जीवन दाता परमात्मा में अपार विद्या है।

जैसे वायु में, प्राण में और चेतन में अनेक गुण होते हैं वैसे ही सर्वोपरि परमेश्वर में अनेक दिव्य गुण होते हैं। ईश्वर जानने योग्य है। उसके गुणों की जितनी प्रशंसा की जाय कम है, क्योंकि उसके विज्ञान का अंत नहीं है। कतिपय साधक ही ऐसे होते हैं जो योगांगों द्वारा समाधि तक पहुँच कर उस पवित्र आनन्द स्वरूप का दर्शन कर पाते हैं।

वैज्ञानिक ऋषि पतंजलि का योग शास्त्र सूक्ष्म विज्ञान है। योग के आठों अंगों में धारणा, ध्यान और समाधि, अंतरंग साधन हैं, और यमनियमासन प्राणायाम, प्रत्याहार बहिरंग साधन हैं। इन धारणा, ध्यान और समाधि का मूल उद्देश्य है–ध्यान करते समय अन्तर्मुखी होकर चित्त अर्थात् मन को एकाग्र करना।

ध्यान में चित्त को एकाग्र करते समय 'ओम् प्रणव' को प्राण के समान अपना आधार समझते हुए प्रेम से अन्तर्दृष्टि को भृकुटि या हृदय में जप करते रहना चाहिये। इस प्रकार प्राणायाम के पश्चात् मन को नित्य प्रातः जप के माध्यम से स्व स्वरूप के साथ एकाग्र करने का अभ्यास करते रहना चाहिये। क्योंकि परमात्मा आत्मा से भी अतिसूक्ष्म होने से व्यापक और गति रहित है, इसीलिये ध्यान में अपने मन को भी चंचल रहित करना होता है।

ध्यान उसे कहते हैं कि मन की एकाग्रता में 'ओम् सत्यम्' के अलावा दूसरी कोई चिन्ता या कल्पना न आवे। अतः जब नित्य अभ्यास करते–करते ध्यान में मन का भाव एक बना रहता है, तो प्राण भी स्थिर होने लगता है, उनके एक होते ही सत्यम् जो प्रकाश छिपा रहता है वह साधक को दिखलाई देने लगता है। उस समय उसे आनन्द का ठिकाना नहीं रहता, किन्तु यह सब साधना साधारण नहीं है।

प्रश्न–ऋषि, महात्मा और साधक जन इतने योग ध्यान करते हुए उन्होंने संसार को क्या दिया है? वैज्ञानिकों ने तो अणु–परमाणुओं को ज्ञान प्राप्त कर, उनके परीक्षणों से दूरदर्शन, कम्प्यूटर, एसी, दूरभाष आदि अनेक प्रकार के निर्माण से संसार का बहुत उपकार किया है।

उत्तर–ऋषि और महात्माओं ने युग–युगों से वेद–विद्या, वेदांग, उपवेद एवं दर्शनों आदि के साहित्य द्वारा ज्ञान–विज्ञान का सूत्र एवं शून्य आदि के आविष्कार से संसार का उपकार किया है। इसके अलावा जो भौतिक विज्ञान नहीं दे सका जैसे समाज सुधार के लिये सभ्यता, सदाचारिता, चरित्र निर्माण का ज्ञान, मानव को मनुर्भव बनाने तथा परस्पर मैत्री भाव, उसे ऋषिगण मानव उत्पति काल से माता–पिता, भाई–बहन को समझने का ज्ञानोपदेश देते रहे। इसके अतिरिक्त आत्मोन्नति के लिये आध्यात्मिक विज्ञान के अन्तर्गत योगाभ्यास द्वारा शरीर, मन और आत्मा को स्वस्थ रखने के लिये, ऋषि पतंजलि ने योगशास्त्र का आविष्कार कर दिया, जिसे बाबा रामदेव देश–विदेश के लोगों को साकार कर दिखला रहे हैं।

तात्पर्य यह कि जिस प्रकार सबसे प्राचीन वैदिक संस्कृति भाषा से लौकिक संस्कृत भाषा एवं अन्य देशी–विदेशियों ने उसके माध्यम से अपनी–अपनी भाषा बना ली, उसी प्रकार गुप्त काल के पूर्व से ही विदेशियों के (आर्यावर्त देश) भारत में आवागमन से तथा नालन्दा विश्वविद्यालय आदि के माध्यम से अनेक प्रकार के ऋषियों के ग्रन्थों से ज्ञान–विज्ञान का मूल उन्हें प्राप्त होता रहा और धीरे–धीरे केवल 18वीं एवं 19वीं सदी में ही विज्ञान का वैज्ञानिकों ने उन्नति करना प्रारम्भ कर दिया।

कितना दुःख का विषय है कि ऋषिगोत्र की सन्ततियाँ वेदादि सत्य शास्त्रों एवं रामायण, महाभारत में अनेक प्रकार के अस्त्र–शस्त्रों की विद्या को जानने से वंचित रहीं। केवल तोप, तीर–धनुष, तलवार, एक से एक राजमहलों, मन्दिरों, मूर्तियों को बनाने, पूजने, पुजवाने और गीता ज्ञान से परे होकर 'हरे कृष्ण हरे राम' जपते रह गये। उस समय राजाओं के आपस के विरोध, और ब्राह्मणों के कुल गुरु बन जाने, जाति भेदाभेद एवं इनकी मूर्खता, अनेकता और अंधविश्वास के कारण भारत विदेशियों से नौ सौ वर्ष पराधीन रहा। और अपने साहित्य, संस्कृति, वैदिक ज्ञान एवं धन–दौलत से हीन हो गया।

धन्य है ऋषि दयानन्द को जिन्होंने वेद एवं वैदिक ज्ञान का उद्धार कर सबमें नई चेतना और नई जागृति उत्पन्न कर दी।

मु.पो. मुरारई,
जिला–वीरभूम (प. बंगाल) – 731219
मो. 8158078011

www.thearyasamaj.org

षोडशी कला वार्ता

● श्री देवनारायण भारद्वाज

वार्ता यहाँ से प्रारम्भ होती है। वर्षों पूर्व सेवा निवृत्त हुए एक वयोवृद्ध प्रोफेसर ने पूछा, बताइए श्री राम को बारह कला अवतार और श्री कृष्ण को सोलह कला अवतार क्यों कहते हैं? उत्तर दिया गया। श्री राम का जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को दिन के ठीक मध्य काल में हुआ। दिन का स्वामी सूर्य होता है। इसीलिए उनको सूर्यवंशी कहा जाता है। सूर्य बारह आदित्य के रूप में जाना जाता है। इन्हीं बारहों आदित्यों के परिप्रेक्ष्य में राम को बारह कलावतार कह देते हैं। इसी प्रकार श्री कृष्ण का जन्म भाद्रप्रद कृष्णपक्ष की अष्टमी को मध्य रात्रि में हुआ था। रात्रि का स्वामी चन्द्रमा होता है। इसीलिए उनको चन्द्रवंशी कह देते हैं। चन्द्रमा के प्रकाश के कारण अमावस्या से लेकर पूर्णिमा तक सोलह तिथियों का निर्धारण होता है। इसी परिप्रेक्ष्य में श्री कृष्ण को सोलह कला अवतार कह देते हैं। प्रोफेसर साहब का प्रतिप्रश्न उपस्थित हुआ, तो बताइए, श्री कृष्ण में जो चार कलाएँ अधिक हैं; वे कौन सी हैं?

उत्तर दिया गया–केवल चार ही नहीं, सभी कलाओं की चर्चा की जाएगी। पर पहले यह समझ लिया जाए कि सूर्य–वंश एवं चन्द्र–वंश क्या है? सूर्य एवं चन्द्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सृष्टि संचालन के देवता अवश्य हैं; किन्तु ये जड़ हैं। इनके आदर्श के अनुसार वंश वृद्धि की कामना की जाती है; न कि किसी पुरुष की भाँति इनके द्वारा वंश की स्थापना होती है। यह भी ज्ञातव्य है कि सूर्य चन्द्र–नक्षत्र सब आकाश में अपनी गति–प्रगति–प्रकृति को परमेश प्रभु द्वारा निर्धारित विधानवत् अपनी ज्योतिर्मय आभा आकाश से भूमण्डल पर बिखेरते हैं, तथा इनका रचनात्मक प्रयोग व परिणाम पृथिवी पर ही संभव होता है। यह भी ठीक है कि सूरज में ताप होता है तो प्रकाश भी होता है। इस आलोक के सप्त रंग ही नहीं अनेकशः रंग भी होते हैं। सभी वृक्ष–वनस्पतियों, पर्वत व हीरक प्रस्तरों की रचना का आधार सूरज ही है। पर, चन्द्रमा की अपनी ही विशेषता है। उसमें प्रकाश नहीं होता, किन्तु सूरज से लेकर उसे शीतलता प्रदान कर सोम बना देता, जिससे फल–अन्न–कन्द–फूलों में सौन्दर्य एवं ओषधि गुण का समावेश होकर वह प्राणिमात्र के स्वास्थ्य–सुख का स्रोत बन जाता है। इन व्योम–विहारी ग्रह–उपग्रह–तारक मण्डल को अपनी क्षमताओं के प्रदर्शन के लिए वहाँ कोई अवसर नहीं, जहाँ पर ये अपनी झलक दिखाते हैं। इसके लिए चाहिए पृथिवी माता। जिसकी गोद में उत्पन्न मानव यह घोषणा कर सके 'माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (अथर्व 12.1.12) भूमि मेरी माता है मैं पृथिवी का पुत्र हूँ। चाहे कोई सूर्य–वंशी हो या वह चन्द्र–वंशी हो, ये अलंकार सुशोभित उसी के मस्तक पर होते हैं–जो भूवंशी या गोवंशी होता है।

लेख–प्रवाह को मोड़कर शीर्षक की ओर लाते हैं। ईश्वर ने अपने ब्रह्माण्ड के अनुरूप ही अपने श्रेष्ठ पुत्र मनुष्य को उसका पिण्ड दिया है। अपने द्युलोक, अन्तरिक्ष एवं पृथिवी के अनुरूप मनुष्य को हिमाद्रि (सिर) हृदय (मन) हाथ (शरीर) प्रदान कर अपना प्रतिनिधि पुत्र बनाया है। यह तीनों ज्ञान, संकल्प एवं क्रिया के आधार बनते हैं। सिर या मस्तिष्क ज्ञान का आगार, हृदय ज्ञान के अनुरूप व्रत–संकल्प का सूत्रधार, इनसे प्रेरित होकर हाथ करते जगत–व्यवहार। बात सामान्य मनुष्य की है; अन्यथा विकलांग लोग भी प्रतिष्ठित कीर्तिमान प्राप्त कर लेते हैं। इसीवर्ष (2016) में ब्राजील के रियो नगर में ओलम्पिक स्पर्धाएँ हुईं, जिनमें भारत के दो खिलाड़ी रजत एवं कांस्य पदकों पर सीमित रहे। बाद में वहीं पैरालंपिक खेल हुए, जिनमें भारत के चार दिव्यांग खिलाड़ियों ने दो स्वर्ण, एक रजत तथा एक कांस्य चार पदकों को भेंट कर भारत राष्ट्र को गौरवान्वित किया। 'कला' शब्द बहु आयामी अर्थवाचक है, प्रसंग के अनुसार उसके प्रयोजन को समझना पड़ता है।

शिल्प, अंश, भाग, लेश, अल्पसमय, संख्या, छटा, शोभा युक्ति, ढंग, कोण, चन्द्रमा की स्थिति, एवं सूर्य का बारहवाँ भाग, आदि सभी प्रसंगानुसार 'कला' शब्द से उद्बोधित होते हैं। सूर्य बारह आदित्य रूप में एक वर्ष के अन्तराल को पूर्ण करता है। यथा–1. विष्णु–चैत्र 2. अर्यमन–वैशाख 3. वैवस्वत–ज्येष्ठ 4. अंशुमान–आषाढ़ 5. पर्जन्य–श्रावण 6. वरुण–भाद्रपद 7. इन्द्र–आश्विन 8. धातृ–कार्तिक 9. मित्र–मार्गशीर्ष 10.पूषन–पौष 11.भग–माघ 12. त्वष्टा–फाल्गुन। ये सभी आदित्य एवं महीने सूर्य–चन्द्र–पृथिवी की पारस्परिक गति समन्वय के साथ ऋतुओं का क्रम संचालित करते हैं, जो शीत–ताप व उत्पाद की विविधता से सुख सम्वर्धन व शोधन करते रहते हैं। साम–गान गाकर हर्ष मनाते हैं।

वसन्त इन्नु रूत्यो ग्रीष्म इन्नु रूत्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रूत्यः।। साम 616।।

तन–मन–धन स्वस्थ सटीक करो।
क्षण क्षण जीवन रमणीक करो।
फिर फिर मधुमय आए वसन्त। मुस्कायें सारे दिग–दिगन्त।
हरियाली की कोमल किसलय, गर्मी में पक्व प्रतीक करो।
क्षण क्षण जीवन रमणीक करो।।1।।
वर्षा लाए सुभग सोम को। शरद बनाए शान्त व्योम को।
हेमन्त सफलता दृढ़ता दे, सम शिशिर विराग सुलीक करो।
क्षण क्षण जीवन रमणीक करो।।2।।
शैशव किशोर कौमार्य आयु। हो युवा प्रौढ़ या वृद्ध आयु।
जीवन की सभी अवस्थाएँ, प्रभु सफल सार्थक ठीक करो।
क्षण क्षण जीवन रमणीक करो।।3।। –देवातिथि

शरीर में जैसे जीवात्मा है वैसे ही इस सौर–मण्डल का आत्मा आदित्य है–"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" (ऋ.1.115.1) अर्थात् सब स्थावर व जङ्गम जगत् का आत्मा सूर्य है। सब प्राणियों का, सब उत्पन्न वस्तुओं का प्राण होकर यह सूर्य उदय होता है। "सम्वत्सर के बारह महीने ही बारह आदित्य हैं" यह बृहदारण्यक उपनिषद का कथन है। यहाँ पर आत्मा एवं जीवात्मा के साथ साथ हुए प्रयोग से इनका अर्थ स्वयमेव स्पष्ट है।

अब आइए चन्द्रमा (मन) की चर्चा करें। "चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत" (यजु.31.12) अर्थात सृष्टि रचयिता के मन से चन्द्रमा तथा चक्षु से सूर्य उत्पन्न हुआ। चक्षु सभी ज्ञानेन्द्रियों के प्रतिनिधि रूप में देखें। यह मस्तिष्क (सिर) को ज्ञानागार बनाती है। यहाँ पर चन्द्रमा प्रभु के मन का प्रतिनिधि बनकर मनुष्य के अन्तःकरण (हृदय–मन) को संकल्पशील बनाता है। जैसे चन्द्रमा के विचरण से कृष्ण (अँधेरा) पक्ष व शुक्ल (उजेरा) पक्ष बनते हैं, वैसे ही मनुष्य के मन में विकल्प व संकल्प के विचार उठते रहते हैं। उसे अपने सद्ज्ञान से सात्विक संकल्प की धारणा बनानी पड़ती है। चन्द्रमा की सोलह तिथियाँ उसकी सोलह कलाएँ हैं। इन्हें देवता संज्ञा से जानें–

★ अमावस्या (पितर) ★ प्रतिपदा (ब्रह्मन्) ★ द्वितीया (त्वष्टा) ★ तृतीया (विष्णु) ★ चतुर्थी (यम) ★ पञ्चमी (सोम) ★ षष्ठी (कुमार) ★ सप्तमी (मुनि) ★ अष्टमी (वसु) ★ नवमी (शिव) ★ दशमी (धर्म) ★ एकादशी (रुद्र) ★ द्वादशी (वायु) ★ त्रयोदशी (काम) ★ चतुर्दशी (अनन्त) ★ पूर्णमासी (विश्वेदेव)

तिथिवार सभी देवता कला रूप में मनुष्य के मनोमय संकल्प को प्रेरित व प्रभावित करते हैं। व्यवहार रूप में चन्द्रमा की सोलह कलाएँ यों भी जानी जाती हैं। अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शांतिनी, चन्द्रिका, कांति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूषणा और पूर्णा। यह सभी मनुष्य की विचार शृंखला और संकल्प के निर्धारक तत्त्व हैं। "चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः (पारस्कर गृह्यसूत्र) चन्द्रमा नक्षत्रों का स्वामी है। जैसे आकाश में तारक–नक्षत्र टमटिमाते हैं, वैसे ही मन में विचार दमकते हैं।

सूर्य के ज्ञान–प्रकाश से सम्प्रेरित चन्द्र के शिव संकल्प का लाभ क्रिया भूमि पर उतरने से ही संभव है। इसके लिए किसी षोडशी का ही सहारा लेना पड़ेगा। वह और कोई नहीं प्रभु प्यारे की सोलह कलाओं से भरपूर शक्ति ही है। आइए उससे मिलिए।

यस्मान्नजातः परोऽअन्योऽअस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी।। (यजु. 8.36)

अर्थात्– जिससे अन्य कोई बड़ा या श्रेष्ठ नहीं हुआ है; जो सब लोकों में प्रविष्ट होकर पूर्ण हो रहा है। वही प्रजा का स्वामी प्रजापति सब प्रजाओं में रम रहा है। जिसने सूर्य, वायु, अग्नि तीन ज्योतियों को रचा है वह षोडशी–सोलह कलावान् ईश्वर है। मन्त्र का सार संकेत यही है कि सूर्य का ज्ञान–प्रकाश, हृदयान्तरिक्ष के वायु संकल्प में ढल कर जब क्रिया भूमि पर उतरता है, तब ही वह तेजस्वी अग्नि के रूप में, ज्ञान गमने–प्राप्ति के फल प्रदान करता है। ऐसा मनुष्य प्रभु की सोलह कलाओं का अधिष्ठाता निम्नानुसार बनता है। उसमें 1–प्राण जीवनी शक्ति 2–श्रद्धा (सत्याधारणा) 3–आकाश (खम्) 4–वायु (गतिशीलता) 5–ज्योति (ज्ञान प्रकाश) 6–आपः (नम्रता) 7–पृथिवी (सहनशीलता) 8–इन्द्रियाँ (ज्ञान–कर्म प्रेरिका) 9–मन (मननशीलता) 10–अन्न (धारण शक्ति) 11–वीर्य (तेजस्विता) 12–तप (कष्ट सहिष्णुता) 13–मन्त्र (मननशीलता) 14–कर्म (पुरुषार्थ) 15–लोक (जग व्यवहार) 16–नाम (यश) रूप धारणी सोलह कलाओं का अवतरण होता है।

महर्षि दयानन्द प्रणीत संध्या–उपासना में प्रत्येक मनुष्य अपने अंग स्पर्श कर सोलह कलाओं का अधिकारी बनता है। जिनमें से प्रथम आठ ज्ञान सूचक मध्य की चार संकल्प सूचक तथा अन्तिम चार क्रिया सूचक होती हैं। देखिए– ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। (8) ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः (4) ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकर पृष्ठे। (4) = (8+4+4 = 16)

जिस प्रकार सूर्य–चन्द्र–पृथिवी के सन्तुलन बिना सृष्टि असंभव है, उसी प्रकार मस्तिष्क–हृदय–हाथ के सामंजस्य बिना मनुष्य अपूर्ण है। राम और कृष्ण की कलाओं को पृथक पृथक नही समन्वय के साथ देखना ही उचित है। लेखक ने चौसठ कलाओं की तालिका भी देखी है; किन्तु उसमें करणीय–अकरणीय स्वार्थ पूरक क्रिया से होने से वे सभी कला की कोटि में नहीं आती हैं। जिसे बोझ समझ कर किया जाए वह काम हो सकता है, किन्तु जिसे कल्याण की भावनापूर्वक मोदमगन मन से किया जाये, वही कला है। इस गुरु–गम्भीर लेख को यदि पाठक सहज स्वभाव से पढ़ लेते हैं, तो यह लेखक को अनुग्रहीत करने की उनकी कला हो मानी जाएगी।

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़
202001(उ.प्र.)

www.thearyasamaj.org

देव दयानंद शरणं गच्छामि

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

ब्रह्मानंद, सच्चिदानंद के संसर्ग में मोक्षानंद रसपान करती हुई महर्षि दयानन्द की आत्मा से सम्पर्क करने की मेरी अभिलाषा दिन व दिन बलवती होती गई। सम्पर्क करने कोई उपाय न देखकर कम्प्यूटर का ध्यान आया। गूगल पर सब जानकारी मिल जाती है। पर वीडियो कान्फ्रेंसिंग के लिये महर्षि दयानन्द उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। मैं तो उनसे आमने सामने बात करना चाहता हूँ। केवल उनसे ही। संकट में उन्हीं ने मुझे डाल रखा है।

कुछ समय परेशान रहा। अचानक मस्तिष्क ने सूचना दी कि कल्पनालोक में 'महर्षि दयानंद' से बात की जा सकती है। क्षणभर में ही महर्षि और मैं आमने सामने थे। महर्षि से कहा आपने बड़े संकट में डाल दिया है?

महर्षि ने कहा– कैसे

मैं– आपके बताये ईश्वर के उन्नीस गुण–तत्वों/मानदण्डों में से केवल दो गुणतत्वों–निराकार और सर्वव्यापक से मुझे सर्वाधिक आपत्ति है।

महर्षि– इन दो गुणों से ही क्यों?

मैं– इन दो गुणों के कारण ही आप द्वारा समर्थित ईश्वर के लिये संभव हो पाया है कि वह इस पृथ्वी लोक में ही नहीं, अपितु अनंत ब्रह्माण्ड के कण–कण में समाया हुआ है।

महर्षि– ठीक–ठीक समझा तुमने।

मैं– आपका ईश्वर समस्त चेतन जगत् में, मानव/जीवात्मा के कर्मों का ही नियामक है, अन्य जीवों का नहीं। कर्म के अनुसार ही पक्षपात रहित न्याय से फल– सुख–दुःख देता है। यह क्रम एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है जब तक जीवात्मा मोक्ष को न प्राप्त कर ले। मोक्ष का रास्ता बड़ा कठिन–टेढ़ा है। आप यह भी मानते हैं कि ईश्वर की पूजा सर्वमान्य प्रचलित रूप में नहीं की जाती। उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जानी चाहिये। यही नहीं, उसके गुण, कर्म और स्वभाव अपनाकर अपना चरित्र सुधारना चाहिये अन्यथा उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना का कोई लाभ नहीं।

महर्षि– बहुत ठीक समझा तुमने।

मैं– बस, बहुत हो चुका। बहुत कठिन है आपके ईश्वर को साधना। मुझे आपका ईश्वर स्वीकार नहीं।

महर्षि– फिर किसे ईश्वर मानोगे?

मैं– किसी को भी। ब्रह्मा, विष्णु, शिव।

महर्षि– ठीक है। संस्कृत में 'धातु' से शब्दार्थ ग्रहण किया जाता है। अतः समस्त सृष्टि का निर्माण करने से 'ब्रह्मा', सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु', कल्याण अर्थात् सुख देने वाला होने से उस परमात्मा को 'शिव' कहते हैं। ये तीनों विशेषण एक ही परमात्मा के हैं।

पुराण प्रतिपादित ब्रह्मा, विष्णु, शिव के ईश्वर परक अर्थ किये जायें तो तीन ईश्वर सिद्ध होते हैं जबकि ईश्वर एक ही है। ब्रह्मा की पूजा साधारणतया प्रचलन में नहीं है। पुष्कर–राजस्थान में उसका एक ही मंदिर है। शिव की पूजा नहीं होती। योनी आकार के पात्र स्थापित शिवलिंग की पूजा होती है। क्या तुम शिवलिंग की पूजा ईश्वर मानकर करोगे?

मैं– मेरा दिमाग घूम गया। चुप हो गया।

महर्षि– अधिकांशतः विष्णु की पूजा प्रचलन में नहीं है। उनके अवतारों की पूजा होती है। अवतार होने से ईश्वर 'अजन्मा' और 'अमर' नहीं हो सकता। सब जानते हैं अवतारों/महापुरुषों का जन्म हुआ और उनका स्वर्गवास भी हुआ। तुम उनके अवतारों की पूजा करोगे?

मैं– हाँ।

महर्षि– उनकी पत्नी, बच्चों और सेवक की भी?

मैं– आपका इशारा समझ रहा हूँ। श्रीराम भगवान हैं, सीता माता हैं और दास भाव में सेवा करने वाले हनुमान जी हैं। इन तीनों की पूजा–अर्चना करूँगा।

महर्षि– क्या इनकी पूजा पृथक–पृथक ईश्वर मानकर करोगे या इनमें एक ही ईश्वर है, ऐसा मानकर करोगे?

मैं– जिसकी मूर्ति के सामने खड़े होकर पूजा करते हैं, उसी में ईश्वर भाव रखकर पूजा की जाती है।

महर्षि– भागवत के माखन चुराने वाले, गोपियों के साथ रास–लीला करने वाले श्रीकृष्ण की भी तुम पूजा करोगे?

मैं– श्रीकृष्ण की पूजा का सर्वाधिक प्रचलित रूप यही तो है।

महर्षि– यह तो विष्णु के दो अवतारों की बात हुई। अभी बाईस अवतार और हैं। पौराणिक 33 करोड़ देवता मानते हैं। उनकी पूजा के लिये तुम्हें करोड़ों बार जन्म लेना पड़ेगा और मरना पड़ेगा।

मैं– आप डरा रहे हैं।

महर्षि– नहीं। मैं तो तुम्हारे ईश्वरों–देवताओं का परिचय करा रहा हूँ। अच्छा, यह बताओ कि इनमें से किसी एक ही ईश्वर की पूजा क्यों न करोगे?

मैं– इसलिये कि यदि एक देवता प्रसन्न न हो तो दूसरा और दूसरा नहीं तो तीसरा........ कोई न कोई तो पिघलेगा। मेरा काम बन जाएगा।

महर्षि– क्या काम बन जाएगा?

मैं– मुकद्दमा जीत जाऊँगा।

महर्षि– किससे मुकद्दमा जीत जाओगे?

मैं– बड़े भाई से।

महर्षि– क्या दशरथ पुत्र भरत ने श्री रामचन्द्र जी के विरुद्ध मुकद्दमा जीत कर अयोध्या का राज्य प्राप्त किया था?

मैं– चकरा गया। कोई उत्तर नहीं था। मौन साध गया।

महर्षि– इन देवी देवताओं के अतिरिक्त पुट्टपार्थी के साँई बाबा (अब स्वर्गवासी), शिरड़ी के साँई, आसाराम और कबीर पंथी रामपाल (दोनों जेल में हैं; और उनकी जमानत भी नहीं हो रही) इनकी भी पूजा ईश्वर मानकर करोगे यदि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई तो!

मैं– अवश्य ही करनी पड़ेगी। मुझे अपनी मनोकामना पूर्ति से मतलब है, कोई भी करे।

महर्षि– कब्र में मृत अवस्था में पड़ा कोई पीर–फकीर भी?

मैं– बिलकुल।

महर्षि के इन प्रश्नों से मस्तिष्क में धुंधलका छाने लगा था। दिमाग गरम हो चला था। अन्दर ही अन्दर व्याकुलता बढ़ने लगी थी। इतने में ही महर्षि ने अगला प्रश्न दाग दिया– पता है पण्डे, पुजारी, महंत मनोकामना पूरी न होने पर क्या कहते हैं?

मैं– हाँ पता है। ज्योतिषियों के पास भेजते हैं जो ग्रह–नक्षत्रों के विकट जाल में फंसा देते हैं। गृह–नक्षत्रों की बाधा पार करने के लिये व्रत, उपवास, पूजा आदि कराते हैं। जमकर दान–दक्षिणा लेते हैं। फिर भी यदि मनोकामना पूरी नहीं होती तो 'भाग्य' का लिखा बताते हैं।

महर्षि– इसके अतिरिक्त, परिवार में मृत्यु होने पर 'तेरही' का भोज, गया (बिहार) में पिण्डदान, प्रतिवर्ष श्राद्ध आदि भी करना पड़ेगा।

अब तक मेरा धैर्य टूट चुका था।

मेरी मनोदशा को भाँप कर महर्षि ने कहा– वत्स! सच्चे ईश्वर की खोज की कामना चौदह वर्ष की आयु में हुई। 21 वर्ष की आयु में गृहत्याग के पश्चात् चौदह वर्ष तक रात–दिन सच्चे ईश्वर की खोज में, साधु संन्यासियों के पास समस्त भारत में भटकता रहा। तुम एक ही वार्तालाप में, थोड़े से उद्घाटन से ही घबरा गए। वेद सम्मत ईश्वर कोई उल्टी सीधी मनोकामना पूरी नहीं करता। मुकद्दमा नहीं जिताता। चोरी–चपाटी, अपहरण, बलात्कार, भ्रष्टाचार में सहायता नहीं करता। वह पुरुषार्थी– परिश्रमी, मेहनती सदाचारी बनने की प्रेरणा करता है। सत्कर्म करने की आज्ञा करता है। ऐसे मानव की वह पूरी पूरी सहायता करता है। कष्ट पड़ने पर वह राह दिखाता है।

हे महर्षि! आपने सही कहा।

देव दयानंद शरणं गच्छामि।

22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज,
लश्कर, ग्वालियर 47401 म.प्र.
मोबाइल 9516622982

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

यजु. 20.21

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

मानव गायत्री कथा

मानवीय शरीर का निरीक्षण किया। देखते ही वे बोले–ये प्रिय हैं; ये सुन्दर हैं! तब इनमें उन्होंने प्रवेश किया। मानव–शरीर को उन्होंने अपना निवास–स्थान बना लिया। तभी से मानव–शरीर को ऋषिभूमि कहते हैं। सात ऋषि इसमें रहते हैं–पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, छठा मन और सातवीं बुद्धि।

परन्तु वेद और उपनिषद् इस शरीर को केवल ऋषि–भूमि कहकर ही सन्तुष्ट नहीं हुए। ऋषि–भूमि कहने के बाद इसे देवपुरी भी कहा। 'आठ चक्र नौ द्वारों वाली देवताओं की पुरी अयोध्या है यह।' ऐसा उल्लेख किया है। इस प्रकार इसको देवपुरी कहा गया। परन्तु ऋग्वेद ने इनसे भी आगे बढ़कर इसे ब्रह्मपुरी कहा। अपने मधुर शब्दों में उसने घोषणा की, 'यह ब्रह्मपुरी है।' केवल यही एक शरीर है जिसमें परमात्मा के दर्शन होते हैं। यही एक शरीर है जिसमें आत्मा अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। ऐसा है यह शरीर, यह नौ द्वार का पिंजरा। इसीलिए इसको सबसे उत्तम कहा गया है। किन्तु हाय रे मानव! इतनी अमूल्य वस्तु को प्राप्त करके भी तू इसके मूल्य को परख नहीं सका।

सुनो! एक था दुर्ग। वह दुर्ग अति विशाल था। चौरासी लाख उसके द्वार थे और एक के अतिरिक्त सभी द्वार बन्द। एक निर्धन नेत्रहीन प्राणी उसमें कारावास भोग रहा था। वह खुजली के रोग से ग्रस्त, नेत्र–विहीन था। बाहर जाने का मार्ग मालूम नहीं था। किसी ने दुःखी देखकर पूछा–"क्या चाहते हो?" अन्धे ने हाथ जोड़कर कहा– "इस दुर्ग से बाहर जाना चाहता हूँ। इसके दुःखों से दुःखित हो चुका हूँ।" पूछनेवाले को करुणा आ गई– "सुन अभागे! चौरासी लाख द्वार हैं यहाँ, किन्तु एक के अतिरिक्त सभी बन्द हैं। उनके साथ टकराने से कुछ लाभ नहीं। इस दीवार पर हाथ रखकर चलता जा। जहाँ पर खुला द्वार होगा, वहाँ से बाहर निकल जाना।' अन्धे ने कहा– "मेरा हाथ दीवार पर रख दो।" और वह चलता गया, चलता गया। एक द्वार के बाद दूसरे द्वार की ओर बढ़ता गया। वह भी बन्द, यह भी बन्द, खुजली होने लगी। दीवार से हाथ उठाकर खुजाने लगा और चलता गया। इस प्रकार द्वार निकल गया; परन्तु फिर जब हाथ रखा तो द्वार बन्द था। फिर चलता गया। सारा चक्कर काटकर खुले द्वार के पास पहुँचा, तो फिर खुजली, फिर द्वार निकल गया। इस प्रकार वह चलता जाता है।

आत्मा ही वह नेत्रहीन व्यक्ति है। चौरासी लाख द्वार, चौरासी लाख योनियाँ हैं। खुला द्वार मानव–शरीर है। खुजली वह वासनामय अग्नि है, जो मनुष्य को यह देखने नहीं देती कि द्वार खुला है। खुजली करने में स्वाद आता है अवश्य, रक्त–स्राव होने लगता है, व्रण भी बढ़ जाता है, किन्तु आकांक्षाओं की यह खुजली विश्राम तो लेने नहीं देती। इससे बच सको तो द्वार खुला है, बाहर चले जाओ। नहीं तो घूमते रहो इसी दुर्ग में।

यह है मानव–शरीर की उत्कृष्टता। यह है वह कारण जिससे इसको सबसे बड़ा और सबसे श्रेष्ठ कहा गया। इसको ऋषि–भूमि, देवपुरी और ब्रह्मपुरी कहा गया। यह मोक्ष का द्वार है। कई लोग इस बात को सुनकर कहते हैं– 'हाय! हमने तो यह जीवन व्यर्थ खो दिया।' कई लोग अपने जन्मदिवस मनाते हैं, प्रसन्न होते हैं कि अब चालीस के हो गए, अब पचास के, अब साठ के। मैं इनकी प्रसन्नता देखता हूँ तो चकित होता हूँ– अरे! प्रसन्नता किस कारण से? जिस अमूल्य जीवन को नष्ट कर दिया, उसकी प्रसन्नता मनाते हो? प्रसन्नता के अतिरिक्त यह सोचो कि शेष क्या है? चालीस, पचास, साठ वर्ष तुमने खुजली करने में बिता दिये। खुला द्वार निकले जाता है। हो सके तो सँभालो! बाहर चलने की तैयारी करो। अन्यथा फिर वही बन्द दुर्ग है। फिर वह तिरासी लाख निन्यानवे हज़ार नौ सौ निन्यानवे द्वार हैं।

क्रमशः....

राष्ट्रनिर्माण

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

किसी भी राष्ट्र की मजबूत बुलन्द इमारत के निर्माण के लिए सर्वाधिक आवश्यक है कि उस इमारत के निर्माण में प्रयोग होने वाली इकाई अर्थात् प्रत्येक ईंट मजबूत हो और अटूट बंधन में एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हो। जिस प्रकार इमारत के निर्माण में ईंट का मजबूत होना आवश्यक है ठीक उसी प्रकार राष्ट्र के निर्माण में उसकी प्रत्येक इकाई अर्थात् प्रत्येक नागरिक का मजबूत होना आवश्यक है। प्रत्येक नागरिक के मजबूत होने के लिए उसमें कुछ गुण विशेष होने अत्यंत आवश्यक हैं।

अथर्ववेद के बारहवें कांड का प्रथम सूक्त भूमि सूक्त के नाम से सुविख्यात है और अपनी मातृभूमि अपने राष्ट्र के निर्माण के लिए एक नागरिक के रूप में जिन गुणों को धारण करना अनिवार्य बताया गया है **"सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।"** इस मंत्र में नागरिकों के लिए जिन आवश्यक गुणों का वर्णन किया गया है वह **बृहत् सत्यं** अर्थात् अटल सत्य निष्ठा, दूसरा **ऋतं**–अर्थात ज्ञान, **उग्रं**–क्षात्र तेज, **तपः**–धर्म का पालन, **दीक्षा**–हर काम करने में दक्षता, **ब्रह्म**–ईश्वरीय ज्ञान, **यज्ञः**–परोपकार, दान और त्याग। नागरिकों के ये गुण अपनी मातृभूमि, देश व राष्ट्र का पालन पोषण व रक्षण करते हैं। हमारी मातृभूमि हमारी धरतीमाता हम सभी को धारण करके हमारा पालन पोषण और हमारे सुख के साधन हमें बड़ी सुलभता से उपलब्ध करवाती है। हमारा भी अपनी धारण करने वाली राष्ट्र माता के प्रति कुछ दायित्व बनता है। परस्परतंत्रता के सिद्धांत के अन्तर्गत जिस प्रकार यह भूमि, पृथिवी, भारतमाता हमें धारण कर रही है हम भी वेद मंत्र में दिए गुणों को धारण करके और आपस में सौहार्द, समरसता और प्रेम के अटूट बंधन में बँधकर भारतमाता का पालन पोषण करें।

आइये अब इन गुणों पर एक–एक कर विचार करते हैं। **बृहत् सत्यं** यानी अटल सत्य निष्ठा। हमारी निष्ठा केवल अपने राष्ट्र के प्रति हो जो भूमि हमारा पालन पोषण कर रही है हम उसी के प्रति पूर्णतया समर्पित हों। यदि हम रहें तो यहां, खाये तो यहां लेकिन गुण गाएं किसी अन्य के या फिर हमारी निष्ठा अपनी मातृभूमि के प्रति न होकर किसी अन्य देश के साथ हो तो हम कृतघ्नता दोष के अपराधी देशद्रोही कहलाएंगे। सरल शब्दों में हमारी अटल सत्य निष्ठा, सर्वस्व समर्पण केवल अपने राष्ट्र के प्रति होना चाहिए। दूसरा गुण **ऋतं** अर्थात् यथार्थ का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। इस यथार्थ ज्ञान में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद समाया हुआ है यानि हमें अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। हमारी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति जिसका ज्ञान सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने इस सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक नियमावली के रूप में चार ऋषियों के माध्यम से दिया था अर्थात् इस वैदिक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा में पूरी सृष्टि, पूरी धरती और इसके सभी देश आ जाते हैं। अन्य सभी मत मतांतर तो किसी ना किसी स्वार्थ की भावना के वशीभूत प्रतिक्रियास्वरूप चलाए गए हैं। संस्कृति के मनुष्य के आंतरिक जीवन मूल्य और नैतिकता आती है जो सत्य होने के कारण सदा अपरिवर्तनीय रहते हैं। सभ्यता तो उस संस्कृति के बाह्य चिह्नों का नाम है। हम नागरिकों के लिए अपने पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति के यथार्थ ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है।

तीसरा गुण है **उग्रं** अर्थात् क्षात्र तेज जो कि देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा और उसके विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक है। बलशाली राष्ट्र के लिए उसके प्रत्येक नागरिक में आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक बल का होना राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है। चौथा गुण **तपः** अर्थात् धर्म का पालन और मनुष्य के रूप में हमारा धर्म मनुष्यता है। मनुष्य होने के लिए आवश्यक गुण हैं मननशील व विचारवान होना, सभी से स्वआत्मवत और यथायोग्य व्यवहार करना, निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण, दुष्टों को दंड देते हुए परोपकार के कार्य करना। हमारे धर्म का मूल सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ईश्वरीय वाणी वेद है। अतः धर्म के पालन के लिए वेद ज्ञान होना भी आवश्यक है। पांचवाँ गुण है **दीक्षा** अर्थात् कार्य करने में दक्षता कहा है। **योगः कर्मसुकौशलम्** कहते हुए योगेश्वर कृष्ण ने कार्यों में कुशलता वा दक्षता को ही योग कहा है। अतः राष्ट्र की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए उसके नागरिकों को अपने अपने कार्यों में पूर्णतया कुशल व दक्ष होना आवश्यक है। छठा गुण है **ब्रह्म** अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान। इसके अन्तर्गत हम मनुष्यों को जीवात्मा परमात्मा के सत्यस्वरूप और संबंधों का सत्य ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। उस एक सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, दयालु, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वअन्तर्यामी, सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ, अजर, अमर, अनुपम, नित्यपवित्र और सृष्टिकर्ता ईश्वर का बोध होना अत्यन्त आवश्यक है। इससे हम धार्मिक आडम्बरों, मत–मतान्तरों के मकड़जाल से बचकर एक सूत्र में बंधकर पाखंडियों के शोषण से बच सकते हैं। सातवां गुण **यज्ञः** जिसे देव दयानंद ने हम सभी के लिए नित्यकर्म निर्धारित किया है और इस यज्ञ को मनुष्य अपने जीवन में धारण करे तथा अपने आत्मा में ज्ञान की अग्नि को उद्बुध करके प्रत्येक श्वास प्रति श्वास के साथ सद्कर्मों की आहुति देता रहे। इस यज्ञ में दान, त्याग व परोपकार की भावना समाहित होती है।

यदि राष्ट्र के नागरिक के रूप में इन गुणों को धारण करके परस्पर सौहार्द, समरसता और प्रेम के अटूट बंधन में बंध जाएं तो उन्नत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

602 जी.एच. 53 सैक्टर 20
पंचकूला, हरियाणा
मो. 9467608686, 9878748899

www.thearyasamaj.org

पत्र/कविता

भोग भगाये बिन कभी, नहीं हटेंगे रोग

नाव घिरी मँझधार में, रख साहस का साथ ।
धीरज गर तू धर सके, तेरे सिर पर नाथ ।।

सत्य कसौटी पर परख, तभी बात को मान ।
बिन परखे माने अगर, धोखा निश्चित जान ।।

लगा रहे यदि कर्म में, ज्ञानी बिन घबराय ।
जीवन में मौके मिलें, तभी सफल हो जाय ।।

पत्ता माटी से सना, जाता जल में डुब ।
मानव को ले डूबता, अहं भाव ही खूब ।।

दलदल में जो कूदता, कीचड़ में सन जाय ।
वह अपनी पहचान खो, कीचड़ ही हो जाय ।।

पेड़ छिपा है बीज में, अवसर पर बढ़ जाय ।
छिपी हुई उर वासना, अपना रूप दिखाय ।।

आलस निद्रा वासना, या भूख और क्रोध ।
सेवन से बढ़ते रहें, इनका करो निरोध ।।

भोग भगा कर योग कर, दूर करो सब रोग ।
भोग भगाये बिन कभी, नहीं हटेंगे रोग ।।

खाने को दाना नहीं, रखते हैं उपवास ।
कहें धर्म को मानता, लगता है उपहास ।।

निर्बल करता माफ तो, मजबूरी कहलाय ।
ताकत हो गर हाथ में, माफी मांगी जाय ।।

नरेन्द्र आहूजा विवेक
602, जी.एच. 53 सै.–20
पंचकूला

गौ-भक्तों से निवेदन

आप प्रतिदिन गाय का दूध प्रयोग करें।

गाय के दूध से बने उत्पाद दही, पनीर आदि का प्रयोग करें।

आप अपने घर की सफाई में गौ मूत्र में बने फियल का प्रयोग करें। गौ मूत्र कीट रोधी है?

गाय के गोबर से बने कपडों को जलाकर मच्छर भगाने का प्रयोग करें।

गौ मूत्र से बनी शुद्ध धूप, अगरबत्ती का प्रयोग करें।

धर्म रोगों के उपचार में गौ मूत्र का प्रयोग करें।

दैनिक गो–ग्रास का पालन करें।

आपके आस पास गाय पाली जाती है?

आप अपने परिचितों को गाय के पंचगव्यों के प्रयोग के विषय जागरूक करने का प्रयास करें।

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कोट–अमरोहा–2442221

****

हमारे भाई, हमारे अपने

आज देश में चारों तरह हिन्दू धर्म के ध्वजवाहक चीख–चीख कर कह रहे हैं कि मतान्तरण पर सरकार तुरन्त रोक लगाए। इन लोगों की करुण पुकार न तो सरकार सुन रही है और न ही वंचित वर्ग के लोग। न सुनने का मुख्य कारण क्या है, इस पर क्या कभी इन लोगों ने खुले मन से विचार करने का मन बनाया? इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन वंचित लोगों के साथ कथित हिन्दुओं ने बुरा व्यवहार किया है। मन्दिरों के निर्माण आदि में इन लोगों का सहयोग होने के बावजूद मन्दिरों में इनका प्रवेश वर्जित था। कहीं–कहीं वेद के पढ़ने–सुनने पर प्रतिबंध आदि–आदि था।

मुझे याद है, आगरा जिले के गांव पनवाड़ी में हरिजनों की बारात नहीं निकलने दी गयी, क्योंकि दूल्हा घोड़ी पर सवार था। हरियाणा के रेवाड़ी जिले में कालड़बात गांव में हरिजनों की पिटाई इसलिये की गयी कि सभी अच्छे कपड़े पहन कर मेले जा रहे थे। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के तलैया गांव में हरिजन महिलाओं की बुरी तरह पिटाई इसलिए की गयी कि उन्होंने नंगा नाचने से मना कर दिया। फतेहपुर जिले के धर्मपुर में धनराज हरिजन को इसलिए जिन्दा जला दिया गया कि उसने अपनी पत्नी कुच्ची देवी को सामंतों की हवस शान्त करने के लिए उनके पास भेजने से मना कर दिया था। इन सारी बातों को झेलकर भी वंचित हिन्दू धर्म को अपनाए हुए हैं। फिर भी ये घृणा के पात्र बने हुए हैं। हां, सौभाग्य की बात है कि कुछ वर्षों से रा.स्व. संघ व विश्व हिन्दू परिषद् जैसी संस्थाओं का इस ओर ध्यान गया है और उनकी सेवा की जा रही है। समाधान इसमें है कि हम इस चुनौती को किस प्रकार से लेते है? हम प्रण करें कि स्वामी श्रद्धानन्द, डा. हेडगेवार, श्री गुरु जी तथा वीर सावरकर के बताए रास्ते पर चल कर वंचितों को हृदय से अपना समझें। उन्हें यह आभास न हो कि हम भारत में रहते हुए भी दूसरी श्रेणी के नागरिक हैं, तभी हम मतान्तरण को रोकने में सफल हो सकेंगे।

मामचन्द रिवाड़िया
–23 टैगोर गार्डन, नई दिल्ली–27
मो. 9212003162
8700101500

****

छत्रपति शिवाजी और "विएतनाम"

"विएतनाम"–इस छोटे से देश ने अपने साहस और शौर्य से अमरिका को भगा दिया। लगभग 20 वर्षों तक अमेरिका की फौजें इस देश में अपने आतंक फैलाने में ना काम हुई और अमेरिका को यह देश छोड़ना पड़ा।

प्रथम विजय दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विएतनाम के राष्ट्रपति से पत्रकारो ने पूछा कि आपको अमरिका जैसे देश से लड़ने की प्रेरणा कैसे मिली? राष्ट्रपति ने कहा कि सुदूर भारत में एक राजा से मुझको यह प्रेरणा मिली। उस महान योद्धा का नाम "छत्रपति शिवाजी" था। उसी की प्रेरणा से मैंने युद्धनीति बनाई और अमरिका को परास्त करने में सफलता पाई। ऐसा योद्धा हमारे देश में पैदा हुआ होता तो हम सम्पूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ वर्षों उपरान्त विएतनाम के विदेश मन्त्री भारत यात्रा पर आये। उन्होंने भारत सरकार से आग्रह किया कि छत्रपति शिवाजी के जन्म–स्थल के दर्शन करना चाहते हैं। उनको "रामगढ़" में छत्रपति शिवाजी की जन्मस्थली ले जाया गया तो उन राजनयिक ने समस्त औपरिकताओ को त्याग कर श्रद्धापूर्वक नमन किया और दो मुठ्ठी मिट्टी उठा कर अपने बैग में रख ली। इस मिट्टी को मैं अपने देश की मिट्टी में मिलाऊँगा जिससे हमारे देश में भी ऐसा महान योद्धा का जन्म हो?

इंटर नेट से,

****

मालवीय जी ने सबसे बड़ी गलती किसे कहा था?

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी कट्टर सनातन धर्मी हिन्दू थे। मृत्युपर्यन्त कांग्रेस में रहे थे। 1915 में सामाजिक कार्य करने के लिए आपने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा की स्थापना के लिए सक्रिय होकर कार्य किए। 1936 में हिन्दू महासभा (हिमस) के लिए एक करोड़ रुपए एकत्र करने का संकल्प लिया किन्तु यह पता चलने पर कि वह शीघ्र ही राजनीतिक पार्टी बनने वाली है रुपये एकत्र नहीं किए और हिमस से अलग हो गए।

1946 में जब उन्हें पता लगा कि कांग्रेस धर्म के आधार पर देश का विभाजन मानने के लिए राजी हो गई है तब वे पाकिस्तान में हिन्दुओं के प्रस्तावित उत्पीड़न पर एकान्त में नौ–नौ धार आंसू बहा कर रोते थे। अपनी मृत्यु (12–11–1946) से कुछ दिन पूर्व उन्होंने रोते हुए कहा था कि उनके जीवन की सबसे बड़ी गलती यह थी कि उन्होंने हिन्दू महासभा को छोड़ दिया था जबकि उन्हें कांग्रेस छोड़नी चाहिए थी।

मालवीय जी के समर्थकों से अपील की जाती है कि वे सेकुलर पार्टियाँ छोड़कर राष्ट्रवादी हिन्दू महासभा में आकर उसे बड़ा करें।

आई. डी. गुलाटी
संस्थापक हिन्दू महासभा
18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर
मो. 08958778443

****

www.thearyasamaj.org

डी.ए.वी. ईस्ट ऑफ़ लोनी रोड, दिल्ली, में लगाया गया वैदिक चेतना शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ईस्ट ऑफ़ लोनी रोड़ दिल्ली में चार दिवसीय वैदिक चेतना शिविर लगाया गया विद्यालय में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वैदिक चेतना शिविर का आयोजन अत्यंत उत्साह एवं प्रसन्नता के साथ किया गया। शिविर का शुभारम्भ पवित्र पावनी वेद–माता के मन्त्रोच्चारण द्वारा सम्पन्न प्रातःकालीन देवयज्ञ के साथ हुआ। छात्रों के जीवन में वैदिक चेतना शिविर की उपयोगिता बताते हुए विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती समीक्षा शर्मा जी ने कहा कि वैदिक चेतना शिविर हमें अपने आप को पहचानने में सहायता करते हैं। जिस प्रकार अपने समीप रखे धन से अनभिज्ञ होने पर कोई उस धन की उपयोगिता नहीं पहचान पाता, ठीक उसी प्रकार विशेष गुणों से युक्त होने पर भी प्रत्येक मनुष्य उनको उपयोग में नहीं ला पाता है। परमपिता परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को किसी न किसी गुण से सज्जित किया है परन्तु मनुष्य जीवन पर्यन्त अनभिज्ञ ही रहता है। यदि उसको अपने उस गुण का ज्ञान भी हो तो भी वह सही दिशा में उस का प्रयोग नहीं कर पाता। मनुष्य को अपने गुणों को पहचानने तथा उनको सही दिशा एवं दशा में क्रियान्वित करने का सन्मार्ग दिखाने का कार्य ही इस प्रकार के वैदिक चेतना शिविर करते हैं। इस प्रकार के वैदिक चेतना शिविर छात्रों को प्रेरणा प्रदान करके उनके जीवन में आशा एवं उत्साह का संचार करते हैं।

प्राचार्या जी ने छात्रों को जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये पांच बातों (शिष्टाचार, मधुर व्यवहार, स्वच्छता, स्वस्थ खान–पान एवं मधुर वार्तालाप) को अपनाने का संकल्प कराया।"

चार दिवसीय वैदिक चेतना शिविर में छात्रों के लिये अनेक क्रियाकलापों का आयोजन किया गया। शिविर में माध्यमिक कक्षाओं में छात्र–छात्राओं के लिए हर्ष एवं प्रसन्नता से मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता, श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता आदि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों का उत्साह प्रशंसा योग्य था। शिविर के समापन पर प्रतियोगिताओं में विजयी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। छात्र–छात्राओं ने प्राचार्या महोदया से ऐसे वैदिक चेतना शिविर प्रत्येक वर्ष आयोजित कराने का निवेदन किया।

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षण महाविद्यालय अम्बाला शहर में श्रीमद्भगवद्गीता पर हुई गोष्ठी

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षण महाविद्यालय, अम्बाला शहर में 'गीता का मेरे जीवन पर प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय सेमीनार में वक्तव्य करते हुए अम्बाला के ऐ.डी.सी. श्री आर. के.सिंह ने कहा कि "जब तक हम गीता को नहीं समझेंगे तब तक उसका प्रभाव कैसे महसूस करेंगे? इसलिए हमें गीता के ज्ञान के साथ–साथ वैज्ञानिक सोच बनानी चाहिए। जिन लोगों को गीता का ज्ञान है वह दूसरों को ज्ञान प्रदान करें।"

कार्यक्रम का उद्घाटन बाबा भूपिन्द्र सिंह जी, पटियाला ने किया और अपने उद्बोधन भाषण में श्रीमद्भगवद्गीता की आधुनिक युग की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उपस्थित बच्चों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि गीता का बच्चों के शैक्षणिक जीवन में विशेष महत्व है। उनकी बौद्धिक क्षमताओं को निखारने में भी गीता का ज्ञान अहम् भूमिका निभाता है।

प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि बच्चों को स्वार्थी नहीं सारथी बनना चाहिए। देश के भविष्य को सुरक्षित रखना है तो हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संभालना पड़ेगा। कार्यक्रम संचालिका डॉ. नीलम लूथरा ने कार्यक्रम की भूमिका में कहा कि गीता एक सर्वांग सुन्दर शास्त्र है। आधुनिक समस्याओं का समाधान गीता में लिखा है। गीता जयंती को तभी सफल बनाया जा सकता है जब गीता जन–जन के जीवन की चेतना का आधार बन जाएगी।

इस अवसर पर शहर की विभिन्न संस्थाओं के गणमान्य लोगों के अतिरिक्त डॉ. महेश मनोचा, श्री प्रभास गोयल जी, श्री नरेन्द्र जुनेजा, डॉ. सुषमा गुप्ता, डॉ. रेनू अरोड़ा, डॉ. नीलम लूथरा, डॉ. सतनाम कौर, प्रो. पवन कुमार, डॉ. पूजा, डॉ. निर्मल गोयल विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्राध्यापक डॉ. नीलम लूथरा ने मुख्यातिथि का आभार प्रकट किया।

एम.आर.ए.डी.ए.वी. सोलन के विद्यार्थियों ने एक राजकीय विद्यालय, के छात्रों के साथ मनाया वार्षिक उत्सव

एम.आर.ए. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सोलन के आर्य युवा समाज के विद्यार्थियों ने कम्यूनिटी प्रोग्राम के तहत कोटला बरोग, जिला सिरमौर स्थित राजकीय उच्च विद्यालय के वार्षिक उत्सव में भाग लिया। इस वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का प्रारंभ डी.ए.वी. के आर्य युवा समाज के तत्वावधान में विद्यार्थियों द्वारा द्विकुण्डीय वैदिक हवन के साथ किया गया जिसमें प्रधानाचार्या एवं अध्यापकों सहित डी.ए.वी. विद्यालय के लगभग 50 विद्यार्थियों एवं स्थानीय पंचायत की प्रधान श्रीमती गीता शर्मा, स्कूल प्रबंधन समिति के प्रधान श्रीमान बलदेव तथा बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने श्रद्धापूर्वक वैदिक हवन में आहुतियाँ दीं। इसके पश्चात स्थानीय राजकीय विद्यालय के बच्चों ने मनमोहक विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी प्रस्तुति दी।

इस वार्षिक उत्सव में डी.ए.वी. की प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकन विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं के अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले राजकीय विद्यालय के मुख्य अध्यापिका श्रीमती दिशा शर्मा तथा अन्य अध्यापक/अध्यापिकायें भी उपस्थित रहे। आर्य युवा समाज के सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। अध्यापकों की ओर से समन्वयक सीमा देवगन, सोनल सूद, राजेश वर्मा एवं धर्माचार्य दीपक उपाध्याय ने इस सामुदायिक कार्यक्रम में भाग लिया।

राजकीय विद्यालय के बच्चों को शुभकामनाएँ देते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती अनुपमा शर्मा ने उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अशीर्वाद दिया। उन्होंने राजकीय विद्यालय की प्रबंधन समिति को भी इस प्रकार के उत्कृष्ट आयोजन के लिए धन्यवाद किया।

उन्होंने बताया कि आर्यु युवा समाज समय–समय पर इस प्रकार के कम्यूनिटी प्रोग्राम का आयोजन करता रहता है जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना जागृत हो सके और उनमें दया, सहानुभूति एवं परोपकार जिससे मानवीय मूल्य विकसित हो सके। उन्होंने वैदिक धर्म के वास्तविक स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि धन्य है महर्षि स्वामी दयानन्द जिन्होंने हमें सच्चे सनातन वैदिक धर्म का मार्ग दिखाया। उन्होंने सबको श्रेष्ठ नागरिक, श्रेष्ठ विद्यार्थी, श्रेष्ठ अध्यापक बनने की प्रेरणा दी।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 28/29-12-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी. ए. वी. धर्मशाला में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन

डी.ए.वी. धर्मशाला के परिसर में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ श्रीमती पी सोफत, क्षेत्रीय निदेशिका, हि0प्र0 जोन–1 के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ में हि0प्र0 जोन–1 के सभी प्राचार्य सर्वश्री जी. के भटनागर , वी.के. यादव, विक्रम सिंह, शेखर मौदगिल, के.एस. राणा, नमित शर्मा, विश्वास शर्मा, दिनेश कौशल, श्रीमती रश्मि जम्बाल एवं श्री एस. एच खान अपने स्टाफ सदस्यों के साथ उपस्थित थे। विद्यालय के धर्मशिक्षक मुकेश शास्त्री ने यज्ञ का संचालन किया जिसमें आर्य युवा समाज के सदस्य और आर्य समाज धर्मशाला के पदाधिकारी और आस–पड़ोस के लोगों ने नवनिर्मित यज्ञशाला में विशेष मंत्रों से आहुतियां देकर वातावरण को यज्ञमय बनाया। सभी ने यज्ञशाला के उद्घाटन के शुभ अवसर पर प्राचार्य और स्टाफ को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उपस्थित होकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे कि हमने इस यज्ञशाला के प्रथम यज्ञ में भाग लिया, श्रीमती पी. साफेत ने डी.ए.वी. विद्यालय के प्राचार्य को बधाई दी और कहा कि अब यहां पर होने वाले यज्ञ से आसपास का वातावरण सुगन्धित और शांति प्रिय बना रहेगा। श्री एस.एच. खान ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि "आप सब का आशीर्वाद हमारे उपर इसी प्रकार बना रहें और हम इसी वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार करते रहें।" अन्त में शांति पाठ के साथ सभी उपस्थित आर्य जनों को यज्ञशेष वितरित किया गया। कांगड़ा जिले के सभी प्राचार्य गण इस अवसर पर हार्दिक प्रसन्न थे। गोष्ठी के लिए प्रस्थान कर गए।

डी. ए. वी., जीन्द में हुआ वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल जीन्द में वार्षिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के यूनियन मिनिस्टर मानीय चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी ने शिरक्त की। समारोह की अध्यक्षता डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धक समिति नई दिल्ली के सचिव माननीय श्री रवीन्द्र कुमार जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धक समिति के कोषाध्यक्ष श्रीमान महेश चोपड़ा जी उपस्थित थे।

विद्यालय के विद्यार्थियों ने स्वागत गीत के द्वारा अतिथियों का अभिनन्दन किया। डी.ए.वी. जीन्द जोन के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी जी ने कविता के माध्यम से चौधरी बिरेन्द्र सिंह जी का अभिनन्दन कर उनको अभिनन्दन पत्र भेंट किया। समारोह में कक्षा आठवीं, दसवीं व बाहरवीं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि ने विद्यालय में निर्मित बहुउद्देशीय हॉल का उद्घाटन किया। बच्चों के द्वारा हरियाणवी नृत्य, सहित अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि डी.ए.वी. विद्यालय वैदिक संस्कृति को अपनाने की प्रेरणा देता है जो आधुनिकीकरण के इस दौर में बहुत ही आवश्यक है। डी.ए.वी. से शिक्षा ग्रहण कर चुके बहुत से विद्यार्थी, स्वतन्त्रता सेनानी, डॉक्टर, जज आदि बन कर देश का गौरव बढ़ाते हैं। यहाँ एकता का पाठ पढ़ाया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि बेटियाँ भी आज के समय में हर क्षेत्र में आगे हैं और यदि प्रयास किया जाए तो हम कल्पना चावला जैसी अनेक बेटियों को जन्म दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि जीन्द जिले को शिक्षा के क्षेत्र में और आगे बढ़ाना है तो जुलाना और उचाना में भी डी.ए.वी. स्कूल खोला चाहियें ताकि वहाँ के बच्चे भी उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त कर सकें। मुख्य अतिथि ने विद्यालय को 11 लाख रूपये देने की घोषणा की।

अध्यक्ष श्रीमान रवीन्द्र कुमार विद्यालय को विद्यार्थियों की संख्या में पूरे हरियाणा में सबसे अग्रणीय बताते हुए कहा कि यह विद्यालय परीक्षा परिणाम और खेलों में भी उत्कृष्ट उपलब्धियों को प्राप्त करता है जिसका श्रेय अध्यापकों की कड़ी मेहनत और डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी का सफल निर्देशन को जाता है। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में पधारी उचाना हल्के कि विधायक श्रीमती प्रेमलता ने कहा कि बच्चे को जैसी शिक्षा मिलती है वैसे ही संस्कार मिलते हैं और डी.ए.वी. संस्थान संस्कार देने में प्रयासरत रहते हैं। डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धक समिति के कोषाध्यक्ष श्री महेश चोपड़ा जी ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि डॉ. विद्यार्थी ने विद्यालय की सुन्दरता को बढ़ाते हुए उस की काया ही पलट दी है। डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी जी ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों को विद्यालय में पहुँचने पर आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विद्यालय के सभी अध्यापकों व सभी कर्मचारियों को बधाई दी।

डी.ए.वी. जयपुर में वैदिक विद्वानों ने किया वेद प्रचार

ऋषि दयानन्द के स्मारक के रूप में स्थापित डी ए वी वेदानुसार मानवीय मूल्यों की स्थापना में सतत निरत हैं। इसी महाभियान के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश से पधारे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेश श्री भानुप्रकाश शास्त्री के वेदोपदेश का एक भव्य आयोजन डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी स्कल, जयुपर में किया गया, जिसमें विद्यालय के सैकड़ों छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

उपसभा राजस्थान के प्रधान व विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने श्री भानुप्रकाश शास्त्री का मन्त्रपट्टिका व पुष्पगुच्छों से स्वागत किया। श्री भानुप्रकाश शास्त्री ने भजनोपदेश के माध्यम से छात्रों को सदाचार व सात्विक आहार का उपदेश दिया। श्री शास्त्री जी ने बताया ईश्वरीय करुणा से 19वीं सदी में ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने सभी कष्टों का मूल वेदों में मानकर घोषणा की "वेद का पढ़ना–पढ़ाना व सुनना–सुनाना आर्यों का परम धर्म है।" मुम्बई में उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, ताकि वेद पठन रूपी परमधर्म का पालन एक निश्चित व्यवस्था के अनुरूप हो सके। प्रवचनकर्ता ने विद्यालय के वैदिक वातावरण व छात्रों के सद्व्यवहार की भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अन्त में "वेदों की ओर लौटो", "आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म", "संस्कृत लाओ, देश बचाओ" जैसे उदघोष लगाए गए।

मानव निर्माण अभियान की इस पुनीत क्रम में हिमाचल से समागत विद्वान्, आशु कवि महात्मा चैतन्य मुनि ने विद्यालय के विशाल व भव्य सभागार में छात्रों को कृतज्ञता, सेवा व ईश–भक्ति जैसे मानवीय गुणों का उपदेश दिया। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त स्थानीय आर्य सदस्य भी उपस्थित थे। मान्यवर मुनि जी ने अनेक कथाओं व सत्य घटनाओं के द्वारा अत्यन्त सहजता से सदुपदेश दिया। उनके सम्बोधन से पूर्व विद्यालय के संगीत विभाग ने सुमधुर गीत प्रस्तुत कर वातावरण को अनुकूलता प्रदान की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**